राधास्वामी सहाय

राधास्वामी मत दर्शन

प्रगट गुरू को मानिये ग्रंथ गवाही ले।
जो चाहे दीदार को सीस उन चरनन दे॥
सतसंग सेवा सार हैं साहब सांचे मीत।
सतसंग सतगुरु साथ हैं उन बिन सभी अनीत॥

अम्बाला शहर

जून १९१६

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

राधास्वामी मत दर्शन

असली परमार्थी कार्रवाई क्या हो सक्ती है॥

१—दुनिया में जितने बड़े बड़े मत जारी हैं उन सब के चलाने वाले अभ्यासी पुरुष थे, और अगर बनज़रे ग़ौर देखा जावे तो मालूम होगा कि मतलब इन पुरुषों का अपने मत के प्रचार से यही था कि जीव-को दुख से निवृत्ती हासिल हो और सुख की प्राप्ती हो और इस निमित्त उन्हों ने जीवों को अपने चरनों में लगा कर कुछ न कुछ करनी उनसे करवाई, मगर आज कल देखने में आता है कि बहुत ही कम लोगों की तवज्जह करनी की तरफ़ है—ज़्याद:तर शास्त्र व ग्रंथ पढ़ के और ज़ाहिरी रस्मियात बजा लाकर अपने दिल-को तसकीन दे रहे हैं कि हम सच्चे और असली पैरोकार फ़ुलां मत के हैं—और ऐसा नशा इस बाचक ज्ञान और बाहिरमुख कार्रवाईका इन लोगोंको हो रहा है कि अक़ले-

सलीम का इस्तेमाल करना भी छूट गया है और अपने मत के बुजुर्गों व पुस्तकों की महिमा गाना और अपने मत को आदिमत और सर्वोत्तम मत सिद्ध करना और जहां-तक मुमकिन हो झूठों सच्चों की जमैयत फ़राहम करना ही अपना परम अर्थ मान लिया है – एक मिनट के लिये भी दिल में यह ख़्याल नहीं आता कि ज़रा बिचारें कि ख़ुद हमने क्या नफ़ा इस मत से हासिल किया है और निज मतलब हमारा यानी दुख की निवृत्ती व सुख की प्राप्ती किस दर्जे तक हमको हासिल हुआ-और यह नहीं सोचते कि बानी मुबानी जो हमारे मत के थे किस क़दर उन्हों ने ज़ोर करनी व रहनी पर दिया है और कितनी तंगी व सख़्ती उठा कर वे ख़ुद अमल यानी अभ्यास मन को बस करने व इन्द्रियों को दमन करने के निमित्त जीवन पर्यन्त करते रहे और हम लोग जो अब आज़ाद दुनिया में बिचरते हैं और शबोरोज़ मन की तरंगों में बह रहे हैं और जानते तक नहीं कि अभ्यास किसको कहते हैं किस मुंह से उपदेश अपने मत का कर सक्ते हैं !

२—ख़्याल करना चाहिये कि अगर कोई शख़्स चाहता है कि उसके तन की शक्तियां जगें यानी उसका बदन मज़बूत और फुर्तीला हो तो वह उसके लिये

किसी पहलवान या उस्ताद की शागिर्दी में रह कर तरह तरह की कसरत हस्ब हिदायत सिखलाने वाले के करता है और कुछ अर्से तक ऐसा अमल करके अपनी ग़रज़ हासिल करता है- और यह भी देखने में आता है कि मन बुद्धी की शक्तियां जगाने के लिये तालिबेइल्म को मदरिसे व कालेज में जाकर उस्ताद व प्रोफ़ेसर से तालीम हासिल करनी होती है यानी ज़ेरे नज़र ऐसे शख़्स के जिसने पहिले अपनी मन व बुद्धी की शक्तियों को जगा लिया है रहकर तालिबेइल्म को ऐसी कसरत करनी होती है कि जिसकी मदद से उसके मन व बुद्धी की शक्तियां जागें-अचरज है कि तन व मन की शक्तियों के जगाने के लिये तो यह तरीक़े अमल इस्तेमाल किया जावे और सुरत यानी आत्मा यानी रूह की शक्तियों के जगाने के लिये न किसी उस्ताद यानी गुरू की तलाश की जावे और न ही किसी क़िस्म का अमल यानी अभ्यास इख़्तियार किया जावे और तन मन की शक्तियों ही के जगाने से रूह की शक्तियां जगाने का दावा किया जावे-याद रहे कि जैसे सिर्फ़ बदन की कसरत करने से मन बुद्धी की शक्तियों का जागना ग़ैर मुमकिन है इसी तौर पर तन व मन की कसरत करने से सुरत यानी रूह की शक्तियों का जागना भी ग़ैर मुमकिन है- और नीज़ जैसे बिला मदद उस्ताद के हर किसी के

बदन की कसरत करने में पूरा एहतिमाल हाथ पैर तोड़ लेने का है और जैसे कोई कम उम्र बच्चा अगर लाइब्रेरी में ता उम्र भी रक्खा जावे बिला मदद पढ़ाने वाले के आलिम नहीं हो सक्ता इसी तौर पर बिला मदद गुरू के अगर कोई पोथियों से जुक्ती अभ्यास की पढ़ कर अमल करना शुरू करेगा भी तो ज़रूर बिल ज़रूर या तो अपनी हान कर लेगा या थक थका कर जहां का तहां रह जावेगा। इसलिये निहायत लाज़िमी हुआ कि सब लोग चाहे वह मानने वाले किसी मत के हों भर्मना को छोड़ कर अव्वल सच्चे दिल से खोज अपने मत के अभ्यासियों का करें और जब कोई अभ्यासी मिल जावें उनकी ख़िदमत में हाज़िर रहकर जो मुनासिब करनी वह तजवीज़ फ़र्मावें अमल में लावें और कुछ अर्से अमल यानी अभ्यास करके देखें कि किस दर्जे तक तजर्बा उनको अपने निज मतलब यानी दुख की निवृत्ती व सुख की प्राप्ती की निस्बत हासिल हुआ।

३–एक और बात ग़ौर करने के क़ाबिल है यानी सब कोई जानता है कि मनुष्य के चोले में तीन वस्तु हैं, अव्वल शरीर दूसरे मन तीसरे सुरत यानी आत्मा यानी रूह–अगर शरीर की ज़बान को हिलाया जावे तो

ज़बान के हिलने से जो आवाज़ पैदा होती है दूसरा शरीरधारी उसको सुनकर जवाब देता है—अगर मन ही मन में यानी मन की ज़बान से किसी की निस्बत मनन या गुनावन किया जावे तो उसके मन पर असर पैदा हो जाता है जैसाकि कहा है—दिल रा बदिल रहेस्त-और यह भी देखने में आता है कि अगर कोई शख़्स ज़रा शरीर से न्यारा हो, मसलन् कोई शख़्स गहरी नींद में हो या किसी दक़ीक़ मस्ले के हल करने में मसरूफ़ हो और अपनी तवज्जह सर्वाङ्ग से उसी मस्ले पर लगाये हुए हो तो कुछ भी उसके सामने हो जावे या उसको ज़बान से बुलाया जावे वह मुतलक़ नहीं सुन सक्ता है—और अगर कोई समाधी की हालत में हो तो उसके सामने कितना ही शोर क्यों न मचाया जावे उसपर कुछ भी असर नहीं होता है-कारपेन्टर की फ़िज़ियालोजी में एक अम्र वाक़आ रंजीत सिंह के वक्त का दर्ज है, यानी कोई फ़क़ीर ज़मीन के नीचे समाधी अवस्था में होकर ६ माह तक मदफ़ून रहा और उसको मुतलक़ असर किसी बाहिरी शोर व शर का नहीं हुआ- मतलब यह है कि देह की ज़बान हिलाने से दूसरा देह धारी आवाज़ सुनकर मुख़ातिब हो सक्ता है और मन की ज़बान हिलाने से दूसरे मन पर असर डल सक्ता है और देह की ज़बान हिलाने से (जो कि हरकत करने के लिये मोहताज मन की धार की

है) देह से न्यारे मनुष्य पर असर नहीं पहुंच सक्ता-इसी तौर पर ज़बान से सुमिरन व पूजा पाठ करने या मन से मनन व बिचार करने से उस मालिके कुल्ल तक जो रूह यानी आत्मा का भंडार है कुछ असर नहीं पहुंच सक्ता। उसके लिये ज़रूरी है कि रूह यानी आत्मा की ज़बान से उसकी याद की जावे और ऐसा करने के लिये लाज़िमी है कि अव्वल रूह की ज़बान हिलाने की जुक्ती दरियाफ़्त करके उसपर कुछ अर्से अमल करके रूहकी ज़बान हिलाने का महावरा किया जावे और इसके लिये जैसा कि दफ़ा २ में बयान हुआ निहायत ज़रूरी है कि ऐसे पुरुषों से संजोग किया जावे जिन्हों ने इस अभ्यास में कमाल हासिल किया है और जिनको साध सन्त महात्मा वग़ैरः नामों से मौसूम किया जाता है।

खुद योगशास्त्र का पहिला ही सूत्र है कि योग चित्त की बृत्ती के निरोध करने यानी रोकने को कहते हैं और कबीर साहब ने भी फ़र्माया है:—

तन थिर मन थिर बचन थिर सुरत निरत थिर होय।
कहें कबीर इस पलक को कलप न पावे कोय ॥

फ़ुक़रा का भी क़ौल है:—

चश्म बन्दो गोश बन्दो लब बिबन्द।
गर न बीनी सिर्रे हक़ बर मन बिखन्द ॥

यानी अव्वल अपने आंख व कान व लब को बन्द करो तब मालिक का भेद ज़रूर मज़राई पड़ेगा—पस उस सच्चे मालिक के याद करने की सच्ची कार्रवाई में और उस से योग यानी वस्ल हासिल करने के अभ्यास में कहां गुंजायश ज़बान या तन या मन के हिलाने की हो सक्ती है—बरख़िलाफ़ इसके जो लोग ज़बान से भजन या मंत्र गाने या किसी बानी या कलाम का पाठ करने या हाथों से हवन वग़ैरः करने या तसबीह माला फेरने या तमाम देह चलाकर चार धाम परिक्रमा करने या घंटा संख बजा कर आरती वग़ैरः करने ही से उम्मेद इस बात की रखते हैं कि निज मतलब उनका हासिल हो जावेगा कैसे जायज़ व दुरुस्त हो सक्ता है।

४—अगर अलफ़ाज़ मज़हब, पन्थ, मारग वग़ैरः के जो इस सिलसिले में इस्तेमाल किये जाते हैं लफ़्ज़ी मानी पर ग़ौर किया जावे तो मालूम होगा कि सब के मानी रास्ते के हैं। ज़ाहिर है कि रास्ते का होना दलील इस अम्र की है कि कोई न कोई मंज़िले मक़सूद ऐसी है कि जहां तक यह रास्ते जाता है। अब हर मज़हब के लोगों से सवाल यह होना चाहिये कि चलनेवाला कौन है—चलना कहां से है—पहुंचना कहां है—और रास्ता किस क़िस्म का है। मगर देखने में आता है कि

बहुत से मतों में ख़ासकर जो हाल के ज़माने में प्रगट हुए हैं मुतलक़ ज़िक्र भी इन बातों का नहीं है—सर्वांग करके तवज्जह स्कूल व हस्पताल व यतीमख़ाना व मसजिद व मन्दिर बनाने या संस्कृत विद्या के पढ़ने पढ़ाने या शादी बेवगान का प्रचार करने या स्त्रियों को आज़ादी देने या राज हकूमत हासिल करने या लेक्चर अपने बाप दादा की महिमा पर देने या भारतमाता की तरफ़ से बिलाप करने या तीरथ बर्त व जात्रा करने वग़ैरः २ कामों में दी जा रही है। हरचन्द सोशल तौरपर या किसी ख़ास मतलब से इन कामों का करना बुरा न हो मगर इन सब कार्रवाइयों को मज़हब के ज़ैल में घसीटना सरासर ज़बरदस्ती है और मज़हब का नाम बदनाम करना है।

५—बहुत से लोग ज़ोर इस बात पर देते हैं कि प्राचीन समय के जो अभ्यास हैं मसलन् हठजोग, प्रानायाम, मुद्रा का साधन वग़ैरः इनका प्रचार होना चाहिये क्योंकि इन ही की क्रिया करने से परमात्मा से मेल हो सक्ता है। सब कोई जानता है कि अव्वल तो इन अभ्यासों के माहिर आज कल नहीं मिलते जिनकी ख़िदमत में रहकर इनकी कमाई की जावे और दूसरे परहेज़ व संजम इनके ऐसे सख़्त हैं कि ज़रा सी बदपरहेज़ी करने में अन्देशा जान जाने या कम अज़ कम

शरीर का सदा के लिये रोगी बनने व आयन्दः के लिये निकम्मा हो जाने का है। इन अभ्यासों के करने के लिये पूरा ब्रह्मचर्य चाहिये जो कि इस समय में नदारद है-स्त्रियां और बच्चे और कमज़ोर व बीमार व बूढ़े आदमी इन की कार्रवाई क़तई नहीं कर सक्ते-शूद्र वग़ैरः वरनों के लोग अगर वह वाक़ई अपने धर्म अनुसार बर्तें तो इस जानिब क़तई क़दम नहीं रख सक्ते-गोयाकि अगर इन अभ्यासों की कमाई कोई कर सक्ता है तो सिर्फ़ ऐसे उच्च वरन के मनुष्य कर सक्ते हैं जो पूरन ब्रह्मचारी हों और वह भी उस हालत में जबकि उनको पूरे अभ्यासी गुरू की सोहबत हासिल हो। अगर यह बात तसलीम करली जावे तो फिर मालिक के चरनों से मेल का अधिकारी आज कल के ज़माने में तो कोई भी न रहा-ख़ुद वह लोग भी जो बड़े ज़ोर शोर से इन अभ्यासों की महिमा गा रहे हैं इस दौलत पाने के नाक़ाबिल हैं-फिर उनके प्रचार से क्या फ़ायदा होगा।

६—फ़र्ज़ कीजिये कि एक पढ़ा लिखा शख़्स है जिसकी उम्र बीस या पच्चीस बरस की है-उसको शौक़ हुआ कि मालिक का दर्शन हासिल करे-वैदिकधर्मी भाइयों के पास जाता है और अपना अर्ज़ेहाल करता

है, जवाब मिलता है कि सुनो—

हर जगह मौजूद है वह पर नज़र आता नहीं।
योग साधन के बिना उसको कोई पाता नहीं॥

ज़रूरी था कि तुम पहिले कम अज़ कम पच्चीस बरस तक ब्रह्मचर्य रखते—ब्रह्मचर्य तुमने रक्खा नहीं पस योग अभ्यास तुम कर नहीं सक्ते इसलिये सिर्फ़ गायत्री मंत्र का जाप करो, हवन करो, यज्ञ करो, वेद शास्त्रों का मुताला करो, वगैरः २, आयन्दः किसी जन्म में जब कभी इन्सान बनोगे और भाग से 'गुरु-कुल' में रहकर तालीम पाओगे और अभ्यासी गुरू से भेंटा होगा तब अभ्यास करने पर मालिक का दर्शन प्राप्त होगा। मुसलमान भाइयों के पास जाता है और अपने दर्द का हाल कहता है। जवाब मिलता है कि पैग़म्बर साहब पर ईमान लाओ, क़ुरान शरीफ़ पढ़ो, नमाज़ पढ़ो, रोज़ा रक्खो, हज करो, ख़ैरात करो, मरने के बाद वक्त मुनासिब पर बिहिश्ते बरीं में क़याम मिलेगा। इसाई भाई भी इसी क़िस्म का जवाब देते हैं कि हज़रत ईसा पर ईमान लाओ, इंजील मुक़द्दस का मुताला करो, और उस पर ग़ौर करो, नमाज़ पढ़ो, जब क़यामत का दिन आवेगा उस दिन तुम्हारी रूह क़ब्र से निकलेगी और बिहिश्त में ठिकाना पावेगी। सिक्ख भाइयों के पास सवाल करने पर जवाब मिलता है कि

गुरू ग्रन्थ साहब का पाठ करो, गुरुद्वारों के दर्शन करो, कढ़ा परशाद तक़सीम कराओ, भेंट पूजा चढ़ाओ, आरती कराओ, वाहगुरू वाहगुरू का दिन रात मुंह से जाप करो, गुरू महाराज सहाई होंगे। इसी क़िस्म के जवाब और मज़ाहिब से भी मिलते हैं। अब ग़ौर का मुक़ाम है कि इन जवाबों से उस सच्चे बिरही खोजी की किस तरह शान्ती हो सक्ती है। वह जवाब देता है कि अगर मरने से पहिले यानी इसी जन्म में मालिक का दर्शन नहीं मिल सक्ता तो क्या एतबार है कि आयन्दः भी मिलेगा–खुद तुमको दर्शन मिला नहीं औरों को उम्मेद किस मुंह से दिलाते हो–कार्रवाइयां जितनी बतलाते हो सब सम्बन्ध तन या मन से रखती हैं–तन व मन हिलाने से चित और भी चलायमान यानी चंचल हो जावेगा और सुरत यानी आत्मा की धार बिशेष तौर पर तन व मन और उनके सामान में पैवस्त हो जावेगी–चाहता हूं मैं मालिक के दर्शन करना और लगाते हो तुम मुझ को तन और मन की क्रिया में और सरन दिलवाते हो उन महापुरुषों को कि जिनको न मैंने और न तुमही ने आंख से देखा है और उम्मेद बंधवाते हो कि आयन्दः किसी ज़माने में मेरी आशा पूरन होगी, बस रहने दीजिये–ईं ख़्यालस्त ओ मुहालस्त ओ जनूं। यानी यह सिर्फ़ ख़्याल है, हासिल होना

मुश्किल है, और पागलपन की बात है।

७— ऊपर के बयान से हर्गिज़ यह मतलब नहीं है कि किसी तौर पर दूसरे मज़हबों का निरादर किया जावे बल्कि मंशा यह ज़ाहिर करने से है कि बवजह गुप्त हो जाने आचार्यों और सच्चे अभ्यासियों के उन मतों में अब जान नहीं रही है-जिस वक़्त पैग़म्बर साहब हज़रत मसीह रामचन्द्र जी या कृष्ण महाराज या गुरू नानक साहब वग़ैरः सच्चे आचार्य देह रूप में बिराजमान थे उस वक्त जो जो जीव उनके चरनोंमें आये बेशक उन समरत्थ पुरुषों ने उन जीवों का अपने दर्जे तक का उद्धार फ़र्माया यानी जिस धाम से वह खुद तशरीफ़ लाये थे उस धाम में अपने सर्नागत जीवों को पहुंचाने का इन्तिज़ाम फ़र्माया। अब चूंकि फ़क़त उन का कलाम रह गया है और आमिल कोई रहा नहीं और बजाय अभ्यास के ज़ाहिरी रस्मियात व मन इन्द्री की कार्रवाइयां प्रचलित होगई हैं इसलिये उन से हसूले मुराद नामुमकिन है।

८— इन ज़रूरी बातों का तज़किरा करने के बाद निहायत मुनासिब मालूम होता है कि थोड़ा सा बर्नन इस बात का किया जावे कि सच्चा कुदरती मज़हब क्या हो सकता है। जैसा कि दफ़ा ३ में ज़िक्र किया गया मनुष्य के शरीर में तीन चीज़ें हैं-तन मन व सुरत

यानी रूह-तन जो पांच तत्त का बना हुआ है उस का भंडार यानी पांच तत्त की रचना आंख से नज़राई पड़ती है। इसी भंडार से तन का मसाला लिया जाता है और मर जाने पर वह मसाला इसी भंडार में समा जाता है। इसी तौर पर मन का भी भंडार है जिसको ब्रह्मांड कहते हैं। ऐसे ही सुरत यानी रूह के भंडार को मालिके कुल्ल कहते हैं। यह देखने में आता है कि तन सरासर गुलामी मन की करता है यानी जो कुछ मन चाहता है तन से कार्रवाई कराता है और यह मन और तन दोनों मोहताज हर वक्त़ सुरत यानी रूह की धार के हैं यानी अगर यह धार खिंच जावे तो मन और तन दोनों बेकार हो जाते हैं गोयाकि रूह हो की शक्ती के वसीले से मन व तन दोनों का काम चलता है। यह भी देखा जाता है कि जिस वक्त़ से रूह तन में प्रवेश करती है उस वक्त़ से रचना की सब जड़ शक्तियां गर्मी बिजली वग़ैरः और सब तत्त हवा पानी वग़ैरः उसकी मातहती में काम करते हैं और जिस्म की तैयारी व शृङ्गार में पूरी इम्दाद देते हैं चाहे जिस्म इन्सान का हो या हैवान का या दरख़्त वग़ैरः का। इस से यह नतीजा निकलता है कि सुरत यानी चेतन शक्ती ही सर्वोपरि शक्ती इस रचना में है और कुल्ल मालिक जो सर्व सुरतशक्तियों के भंडार

हैं परम चेतन शक्ती के सोत पोत हुए और सुरतें उन से मिस्ल किरन के निकलीं। जैसे सूरज और सूरज की किरन में सदा सम्बन्ध क़ायम रहता है ऐसे ही सुरत और कुल्ल मालिक में भी सदा सिलसिला चेतन धार के ज़रिये क़ायम रहना लाज़िमी है। और क़ायदा है कि जहां पर धार है वहां पर धुन भी है। इसलिये उस चेतन धार से भी सदा धुन प्रगट हो रही होगी। अगर इस धुन यानी शब्द को मुनासिब तरीक़ से सुना जावे यानी उस शब्द की धार को पकड़ा जावे तो सुननेवाला ज़रूर उस धाम तक पहुंच सकता है जहां से उस धुन का उत्थान है और ज़ाहिर है कि उत्थान का स्थान वही होगा जहां से सुरत शक्ती का निकास हुआ और वह सोत पोत यानी कुल्ल मालिक ही है। गोयाकि उस धुन को पकड़ कर सुरत अपने निज भंडार में पंहुच सक्ती है। इसलिये यही कुदरती और सच्चा मज़हब हुआ।

हासिल कलाम यह कि चलनेवाली सुरत है, पहुंचना अपने सोतपोत यानी निज भंडार में है, रास्ता वह चेतन धार है जो सदा सुरत को सोत पोत से मिलाये हुए है, जुक्ती चलने की उस धुन को पकड़ के चढ़ना है जो चेतन धार से प्रगट हो रही है। अब सिर्फ़ यह सवाल रह जाता है कि चलना कहां से है।

यानी अव्वल अपने आंख व कान व लब को बन्द करो तब मालिक का भेद ज़रूर नज़राई पड़ेगा—पस उस सच्चे मालिक के याद करने की सच्ची कार्रवाई में और उस से योग यानी वस्ल हासिल करने के अभ्यास में कहां गुंजायश ज़बान या तन या मन के हिलाने की हो सक्ती है—बरखि़लाफ़ इसके जो लोग ज़बान से भजन या मंत्र गाने या किसी बानी या कलाम का पाठ करने या हाथों से हवन वग़ैरः करने या तसबीह माला फेरने या तमाम देह चलाकर चार धाम परिक्रमा करने या घंटा संख बजा कर आरती वग़ैरः करने ही से उम्मेद इस बात की रखते हैं कि निज मतलब उनका हासिल हो जावेगा कैसे जायज़ व दुरुस्त हो सक्ता है।

४—अगर अलफ़ाज़ मज़हब, पन्थ, मारग वग़ैरः के जो इस सिलसिले में इस्तेमाल किये जाते हैं लफ़्ज़ी मानी पर ग़ौर किया जावे तो मालूम होगा कि सब के मानी रास्ते के हैं। ज़ाहिर है कि रास्ते का होना दलील इस अम्र की है कि कोई न कोई मंज़िले मक़सूद ऐसी है कि-जहां तक यह रास्ते जाता है। अब हर मज़हब के लोगों से सवाल यह होना चाहिये कि चलनेवाला कौन है—चलना कहां से है —पहुंचना कहां है— और रास्ता किस क़िस्म का है। मगर देखने में आता है कि

बहुत से मतों में ख़ासकर जो हाल के ज़माने में प्रगट हुए हैं मुतलक़ ज़िक्र भी इन बातों का नहीं है—सर्वांग करके तवज्जह स्कूल व हस्पताल व यतीमख़ाना व मसजिद व मन्दिर बनाने या संस्कृत विद्या के पढ़ने पढ़ाने या शादी बेवगान का प्रचार करने या स्त्रियों को आज़ादी देने या राज हकूमत हासिल करने या लेक्चर अपने बाप दादा की महिमा पर देने या भारतमाता की तरफ़ से बिलाप करने या तीरथ बर्त व जात्रा करने वग़ैरः २ कामों में दी जा रही है। हरचन्द सोशल तौरपर या किसी ख़ास मतलब से इन कामों का करना बुरा न हो मगर इन सब कार्रवाइयों को मज़हब के जेल में घसीटना सरासर ज़बरदस्ती है और मज़हब का नाम बदनाम करना है।

४—बहुत से लोग ज़ोर इस बात पर देते हैं कि प्राचीन समय के जो अभ्यास हैं मसलन् हठजोग, प्रानायाम, मुद्रा का साधन बग़ैरः इनका प्रचार होना चाहिये क्योंकि इन ही की क्रिया करने से परमात्मा से मेल हो सक्ता है। सब कोई जानता है कि अव्वल तो इन अभ्यासों के माहिर आज कल नहीं मिलते जिनकी ख़िदमत में रहकर इनकी कमाई की जावे और दूसरे परहेज़ व संजम इनके ऐसे सख़्त हैं कि ज़रा सी बद-परहेज़ी करने में अन्देशा जान जाने या कम अज़ कम

शरीर का सदा के लिये रोगी बनने व आयन्दः के लिये निकम्मा हो जाने का है। इन अभ्यासों के करने के लिये पूरा ब्रह्मचर्य चाहिये जो कि इस समय में नदारद है–स्त्रियां और बच्चे और कमज़ोर व बीमार व बूढ़े आदमी इन की कार्रवाई क़तई नहीं कर सक्ते–शूद्र वग़ैरः वरनों के लोग अगर वह वाक़ई अपने धर्म अनुसार बर्तें तो इस जानिब क़तई क़दम नहीं रख सक्ते–गोयाकि अगर इन अभ्यासों की कमाई कोई कर सक्ता है तो सिर्फ़ ऐसे उच्च वरन के मनुष्य कर सक्ते हैं जो पूरन ब्रह्मचारी हों और वह भी उस हालत में जबकि उनको पूरे अभ्यासी गुरू की सोहबत हासिल हो। अगर यह बात तसलीम करली जावे तो फिर मालिक के चरनों से मेल का अधिकारी आज कल के ज़माने में तो कोई भी न रहा–खुद वह लोग भी जो बड़े ज़ोर शोर से इन अभ्यासों की महिमा गा रहे हैं इस दौलत पाने के नाक़ाबिल हैं–फिर उनके प्रचार से क्या फ़ायदा होगा।

६—फ़र्ज़ कीजिये कि एक पढ़ा लिखा शख़्स है जिसकी उम्र बीस या पच्चीस बरस की है–उसको शौक़ हुआ कि मालिक का दर्शन हासिल करे–वैदिकधर्मी भाइयों के पास जाता है और अपना अर्ज़हाल करता

है, जवाब मिलता है कि सुनो—

हर जगह मौजूद है वह पर नज़र आता नहीं।
योग साधन के बिना उसको कोई पाता नहीं॥

ज़रूरी था कि तुम पहिले कम अज़ कम पच्चीस बरस तक ब्रह्मचर्य रखते—ब्रह्मचर्य तुमने रक्खा नहीं पस योग अभ्यास तुम कर नहीं सक्ते इसलिये सिर्फ़ गायत्री मंत्र का जाप करो, हवन करो, यज्ञ करो, वेद शास्त्रों का मुताला करो, वग़ैरः २, आयन्दः किसी जन्म में जब कभी इन्सान बनोगे और भाग से 'गुरु-कुल' में रहकर तालीम पाओगे और अभ्यासी गुरू से भेंटा होगा तब अभ्यास करने पर मालिक का दर्शन प्राप्त होगा। मुसलमान भाइयों के पास जाता है और अपने दर्द का हाल कहता है। जवाब मिलता है कि पैग़म्बर साहब पर ईमान लाओ, कुरान शरीफ़ पढ़ो, नमाज़ पढ़ो, रोज़ा रक्खो, हज करो, ख़ैरात करो, मरने के बाद वक्त मुनासिब पर बिहिश्ते बरीं में क़याम मिलेगा। इसाई भाई भी इसी क़िस्म का जवाब देते हैं कि हज़रत ईसा पर ईमान लाओ, इंजील मुक़द्दस का मुताला करो, और उस पर ग़ौर करो, नमाज़ पढ़ो, जब क़यामत का दिन आवेगा उस दिन तुम्हारी रूह क़ब्र से निकलेगी और बिहिश्त में ठिकाना पावेगी। सिक्ख भाइयों के पास सवाल करने पर जवाब मिलता है कि

गुरू ग्रन्थ साहब का पाठ करो, गुरुद्वारों के दर्शन करो, कढ़ा परशाद तक़सीम कराओ, भेंट पूजा चढ़ाओ, आरती कराओ, वाहगुरू वाहगुरू का दिन रात मुंह से जाप करो, गुरू महाराज सहाई होंगे। इसी क़िस्म के जवाब और मज़ाहिब से भी मिलते हैं। अब ग़ौर का मुक़ाम है कि इन जवाबों से उस सच्चे बिरही खोजी की किस तरह शान्ती हो सक्ती है। वह जवाब देता है कि अगर मरने से पहिले यानी इसी जन्म में मालिक का दर्शन नहीं मिल सकता तो क्या एतबार है कि आयन्दः भी मिलेगा—ख़ुद तुमको दर्शन मिला नहीं औरों को उम्मेद किस मुंह से दिलाते हो—कार्रवाइयां जितनी बतलाते हो सब सम्बन्ध तन या मन से रखती हैं—तन व मन हिलाने से चित और भी चलायमान यानी चंचल हो जावेगा और सुरत यानी आत्मा की धार बिशेष तौर पर तन व मन और उनके सामान में पैवस्त हो जावेगी—चाहता हूं मैं मालिक के दर्शन करना और लगाते हो तुम मुझ को तन और मन की क्रिया में और सरन दिलवाते हो उन महापुरुषों को कि जिनको न मैंने और न तुमही ने आंख से देखा है और उम्मेद बंधवाते हो कि आयन्दः किसी ज़माने में मेरी आशा पूरन होगी, बस रहने दीजिये—ईं ख़्यालस्त ओ मुहालस्त ओ जनूं। यानी यह सिर्फ़ ख्याल है, हासिल होना

मुश्किल है, और पागलपन की बात है।

७—ऊपर के बयान से हर्गिज़ यह मतलब नहीं है कि किसी तौर पर दूसरे मज़हबों का निरादर किया जावे बल्कि मंशा यह ज़ाहिर करने से है कि बवजह गुप्त हो जाने आचार्यों और सच्चे अभ्यासियों के उन मतों में अब जान नहीं रही है-जिस वक़्त पैग़म्बर साहब हज़रत मसीह रामचन्द्र जी या कृष्ण महाराज या गुरू नानक साहब वग़ैरः सच्चे आचार्य देह रूप में बिराजमान थे उस वक्त जो जो जीव उनके चरनोंमें आये बेशक उन समरत्थ पुरुषों ने उन जीवों का अपने दर्जे तक का उद्धार फ़र्माया यानी जिस धाम से वह ख़ुद तशरीफ़ लाये थे उस धाम में अपने सर्नागत जीवों को पहुंचाने का इन्तिज़ाम फ़र्माया। अब चूंकि फ़क़त उन का कलाम रह गया है और आमिल कोई रहा नहीं और बजाय अभ्यास के ज़ाहिरी रस्मियात व मन इन्द्री की कार्रवाइयां प्रचलित होगई हैं इसलिये उन से हसूले मुराद नामुमकिन है।

८—इन ज़रूरी बातों का तज़किरा करने के बाद निहायत मुनासिब मालूम होता है कि थोड़ा सा बर्नन इस बात का किया जावे कि सच्चा कुदरती मज़हब क्या हो सकता है। जैसा कि दफ़ा ३ में ज़िक्र किया गया मनुष्य के शरीर में तीन चीज़ें हैं-तन मन व सुरत

यानी रूह—तन जो पांच तत्त का बना हुआ है उस का भंडार यानी पांच तत्त की रचना आंख से नज़राई पड़ती है। इसी भंडार से तन का मसाला लिया जाता है और मर जाने पर वह मसाला इसी भंडार में समा जाता है। इसी तौर पर मन का भी भंडार है जिसको ब्रह्मांड कहते हैं। ऐसे ही सुरत यानी रूह के भंडार को मालिके कुल्ल कहते हैं। यह देखने में आता है कि तन सरासर गुलामी मन की करता है यानी जो कुछ मन चाहता है तन से कार्रवाई कराता है और यह मन और तन दोनों मोहताज हर वक़्त सुरत यानी रूह की धार के हैं यानी अगर यह धार खिंच जावे तो मन और तन दोनों बेकार हो जाते हैं गोयाकि रूह हो की शक्तो के वसीले से मन व तन दोनों का काम चलता है। यह भी देखा जाता है कि जिस वक़्त से रूह तन में प्रवेश करती है उस वक़्त से रचना की सब जड़ शक्तियां गर्मी बिजली वग़ैरः और सब तत्त हवा पानी वग़ैरः उसकी मातहती में काम करते हैं और जिस्म की तैयारी व शृङ्गार में पूरी इमदाद देते हैं चाहे जिस्म इन्सान का हो या हैवान का या दरख़्त वग़ैरः का। इस से यह नतीजा निकलता है कि सुरत यानी चेतन शक्ती ही सर्वोपरि शक्ती इस रचना में है और कुल्ल मालिक जो सर्व सुरतशक्तियों के भंडार

हैं परम चेतन शक्ती के सोत पोत हुए और सुरतें उन से मिस्ल किरन के निकलीं। जैसे सूरज और सूरज की किरन में सदा सम्बन्ध क़ायम रहता है ऐसे ही सुरत और कुल्ल मालिक में भी सदा सिलसिला चेतन धार के ज़रिये क़ायम रहना लाज़िमी है। और क़ायदा है कि जहां पर धार है वहां पर धुन भी है। इसलिये उस चेतन धार से भी सदा धुन प्रगट हो रही होगी। अगर इस धुन यानी शब्द को मुनासिब तरीक़ से सुना जावे यानी उस शब्द की धार को पकड़ा जावे तो सुननेवाला ज़रूर उस धाम तक पहुंच सक्ता है जहां से उस धुन का उत्थान है और ज़ाहिर है कि उत्थान का स्थान वही होगा जहां से सुरत शक्ती का निकास हुआ और वह सोत पोत यानी कुल्ल मालिक ही है। गोयाकि उस धुन को पकड़ कर सुरत अपने निज भंडार में पहुंच सक्ती है। इसलिये यही कुदरती और सच्चा मज़हब हुआ।

हासिल कलाम यह कि चलनेवाली सुरत है, पहुंचना अपने सोतपोत यानी निज भंडार में है, रास्ता वह चेतन धार है जो सदा सुरत को सोत पोत से मिलाये हुए है, जुक्ती चलने की उस धुन को पकड़ के चढ़ना है जो चेतन धार से प्रगट हो रही है। अब सिर्फ़ यह सवाल रह जाता है कि चलना कहां से है।

९—इस तन में ६ चक्र हैं पहिला गुदा दूसरा इन्द्री तीसरा नाभी चौथा हृदय पांचवां कंठ छठा छठाचक्र। तमाम जिस्म की कार्रवाई इन्हीं चक्रों की मार्फ़त हो रही है।

जब कोई शख़्स भूली हुई बात को याद करना चाहता है या किसी मुश्किल मस्ले पर बिचार करता है तो देखने में आता है कि पेन्सिल या क़लम या उंगलियां नाक की जड़ के क़रीब रखकर सोचता है यानी तवज्जह की धार को वहां पर समेटता है।

जब इन्सान मरने लगता है तो अव्वल हाथ पांव ठंडे होते हैं बाद में अक्सर एक सियाह दस्त आता है जो निशान गुदा चक्र खुलने का है। गुदा चक्र से जान सिमट कर इन्द्री चक्र में फिर नाभी चक्र में फिर हृदय और फिर कंठ चक्र में आती है और कंठ में घरघराहट होती है। इसके बाद आंखों की पुतलियां उलटती हैं और चोला छूट जाता है।

बाज़ औक़ात लोगों को पता नहीं चलता कि इन्सान मर गया है या नहीं। मस्लन सांप के काटने की हालत में, मूर्छा में कुछ अर्से रहने की हालत में, वग़ैरः २। ऐसे वक्तों पर डाक्टर लोग आंख की पुतली को मुलाहिज़ा करके पता लगाते हैं कि जान बाक़ी है

या नहीं। इन सब बयानात से ज़ाहिर होता है कि इन्सान की सुरत की बैठक का मुक़ाम कहीं पर दोनों आंखों के मध्य के मुक़ाबिल अन्दर की तरफ़ है और वहां से उसकी किरनियां इन्द्रियों और देही में फ़ैल रही हैं-इसलिये चलना इसी बैठक के मुक़ाम से होगा।

१०- मगर पेश्तर इसके कि कोई इन्सान चलने के लिये क़दम उठा सके निहायत लाज़िमी है कि अव्वल वह अपनी सुरत की ताक़त को थोड़ा बहुत जगा ले-यहां पर हम लोगों का पृथिवी पर बास है जोकि इस पिंड का हृदय चक्र है और जाग्रत अवस्था की कार्रवाई हम लोग अपने हृदय चक्र ही से करते हैं यानी सुरत की मुख्य धार हृदय पर उतर कर सब कार्रवाई तन और मन की कराती है। अब देखना चाहिये कि इस घाट पर कार्रवाई करने की ताक़त जीव में कैसे जागती है। किसी महीने दो महीने के बच्चे को देखिये तो मालूम होगा कि न तो वह आंख से देख सकता है और न कान से सुन सक्ता है और न ही और किसी इन्द्री द्वारा ज्ञान ले सकता है-धीरे धीरे ज्यों ज्यों मां बाप का रूप देखता है और उनका बोल सुनता है चेतन होता जाता है-रफ़्तः २ वह इस क़ाबिल होता है कि मां

के इशारे से चिराग़ की लौ की तरफ़ ताकने लगता है और मां की आवाज़ सुनने लगता है- मां अक्सर औक़ात चुट-की बजाकर या कोई बाजा सुनाकर तवज्जह उसकी अप-ने या बाजे के जानिब मबज़ूल किया करती है। ज्यूं ज्यूं बच्चा बड़ा होता है मां उससे चीज़ों या रिश्तेदारों के नाम बुलवाती है यानी मुहावरा उससे नाम बोलने का कराती है और बाद में चीज़ें दिखला २ कर उनके नामों से बच्चे को मानूस करती है- इस तौर पर बच्चे का ज्ञान इस संसार का बढ़ता जाता है और मन इन्द्री की ताक़तें जागती चली जाती हैं। अगर ऐसा इन्तिज़ाम न किया जावे तो बच्चा बड़ा होने पर निरा जानवर रहेगा। चुनांचे चन्द साल हुए आगरा के क़रीब मुक़ाम सिकंदरा में पादरी लोगों के पास तालीम व तरबियत के लिये एक ऐसा शख़्स आया था जो शिकार खेलते वक्त जंगल में भेड़िये के संग फिरता हुआ पकड़ा गया। यह शख़्स बिलकुल नंगा था और मिस्ल भेड़िये के हाथ पांव के बल चलता था और बोली भेड़िये की सी बोलता था और तमाम आदतें उसकी जंगली जानवरों की सी थीं - दरि-याफ़्त हुआ कि जब यह बच्चा था तो भेड़िया उसको उठा कर ले भागा था और भेड़िये ही ने उसकी परवरिश की थी-पकड़े जाने पर पादरी लोगों ने उसको सीधा खड़ा होना सिखाया और बहुत कुछ कोशिश इन्सानी बोली

सिखाने की की मगर उस में हैवानी आदतें इस क़द्र ग़ालिब थीं कि बहुत ही कम कामयाबी हुई। आख़िर दो तीन बरस ज़िन्दा रहकर मरगया। सिकन्दरा में अब उसकी क़ब्र मौजूद है। अलावा इसके अकबर बादशाह के गुंगमहल का हाल सब को मालूम है यानी १२ बरस की अलहदगी के बाद जब बच्चे गुंगमहल से निकाले गये तो सिवाय गाँय गाँय करने के कुछ न बोल सक्ते थे। इसलिये हृदय घाट की शक्तियाँ जगाने के लिये निहायत लाज़िमी है कि अव्वल बच्चा मनुष्य के सरूप व मनुष्य के बोल से यानी जिन्हों ने इस घाट पर चेतनता जगाई है उनसे संजोग करे। इसी तौर पर सुरत के घाट पर सुरत की शक्तियां जगाने के लिये लाज़िमी है कि चेतन बोल व चेतन रूप से संयोग सुरत की बैठक के स्थान पर किया जावे। जब किसी क़द्र ताक़त सुरत की जाग जावे तब शब्द की डोर को पकड़ कर कार्रवाई ऊंचे चढ़ने की की जासक्ती है।

११—इस तहक़ीक़ात से नतीजा यह निकला कि अव्वल चेतन नाम व चेतन रूप का पता लगाया जावे-निज चेतन नाम सिवाय उस आदि शब्द के कुछ नहीं हो सक्ता जो रचना के आदि में चेतन शक्ती के कारकुन होने से प्रगट हुआ—इसलिये ज़रूरी हुआ कि ऐसे पुरुष की सोहबत की जावे जिस का इस चेतन नाम या बोल

से मेल है और जिसके मेल से वह आप सुरत के घाट पर सदा चेतन है। सन्त मत में इन्हीं को सन्त सतगुरू कहते हैं। शौक़ीन परमार्थी को लाज़िम है कि मिल जाने पर वह कमर बांध कर उनकी सेवा में तत्पर हो और जैसे तैसे उनकी तवज्जह अपने ऊपर ले और जहाँ तक मुमकिन हो गाढ़ी प्रीत उन के चरनों में क़ायम करे। ऐसा करने से दो फ़ायदे हासिल होंगे। अव्वल तो उनकी वजह से इसको संग साथ ऐसे शख़्सों का मिलेगा जो आगे ही इस कार्रवाई में मसरूफ़ हैं और उनकी मदद से इसकी रहनी गहनी सहज में दुरुस्त होनी जावेगी और सच्चा अनुराग व गहरा शौक़ परमार्थ का इसके चित्त में पैदा होता जावेगा। और दूसरे उन महापुरुष के संजोग से सहज में इसके तन व मन की चंचलता और मलीनता दूर होती जावेंगी और रफ़्तः रफ़्तः जब यह अभ्यास करने के क़ाबिल हो जावेगा वह दया कर के इसको जुक्ती अभ्यास की बतावेंगे और यह अपने अनुराग की मदद से और सन्तसतगुरू की मेहर से थोड़े ही अर्से में अपने परम पिता के दर्शन और उनकी दया व मेहर के परचे अन्तर में हासिल करके अपने भागों को सराहेगा और बार बार यह कड़ी इसकी ज़बान पर आवेगी:—

धन सतगुर धन उनकी संगत।

जिस प्रताप पाई मैं यह गत ॥

१२—अब सवाल किया जा सक्ता है कि ऐसे महापुरुष की परख पहिचान क्या है यानी कैसे पता चले कि यह मामूली इन्सान या धोखा देने वाले नहीं हैं बल्कि पूरे गुरू हैं। ख़ास परख पहिचान तो उनकी वही है जो वह दया करके ख़ुद जीव को बख़्शैं। मगर इस क़दर तो यह मालूम कर सक्ता है कि आया वह शब्द अभ्यास की महिमा करते हैं या नहीं और नीज़ उनकी रहनी गहनी से परख सकता है कि आया वह ख़ुद भी शब्द में रत हैं या नहीं। दूसरे यह कि जिसकी सुरत की शक्ती जगी है वह सदा सुरत के अंगों में बर्तैगा यानी मन्सा बाचा कर्मना सदा शील सन्तोष बिरह प्रेम और ज्ञान की झलक उसकी ज़ात से आवेगी। बख़िलाफ़ इसके जहाँ मन की कार्रवाई होगी वहां से सदा काम क्रोध लोभ मोह अहंकार की बदबू आवेगी—इतनी तमीज़ भी ज़रूर हर मुतलाशी कर सकता है। तीसरे अगर वह सुरतवन्त हैं यानी सुरत का घाट उनका खुला है तो वह सब काम काज अपना अचिन्त होकर करेंगे—सोच और बिचार चिन्ता और फ़िक्र उनके नज़दीक नहीं आवेंगे बल्कि जो कोई उनकी सोहबत में रहेगा वह भी इन बिघ्नों से रहित होकर किसी क़दर निचिन्त रहेगा। हम लोगों

को सुरतवन्त होने का ठीक २ तजर्बा नहीं है मगर बच्चे को देखिये चूंकि उसकी सुरत की धार बहुत कम नीचे उतरी होती है और बहुत ही कम संसार में फैली होती है इसलिये वह सदा अचिन्त और मगन रहकर खेलता कूदता है– इससे अन्दाज़ा हो सकता है कि सुरतवन्त पुरुष सदा किस क़दर अचिन्त और मगन रहता है। चूंकि बच्चे की मन और तन की शक्तियां जगी नहीं होतीं इसलिये उसकी कार्रवाई में नादानी और भद्दापन रहता है मगर चूंकि सुरतवन्त पुरुष की तन मन की शक्तियां भी भरपूर जगी हैं इसलिये उसकी सब कार्रवाई भी निहायत सुडौल और सुगम होती है। सब काम काज सहज सुभाव करता हुआ सदा अपने में रत और मगन रहता है। दुनिया के मुश्किल से मुश्किल काम भी निहायत सहूलियत से सरंजाम देता है। इसके बख़िलाफ़ जो लोग सोच सोच कर और दूसरों से सलाह मशविरा करके अपना काम काज करते हैं साफ़ ज़ाहिर है कि वह मनवन्त यानी जीव हैं–उनसे काज नहीं सरेगा। शुरू शुरू में खोजी के लिये यह तीन परख पहचानें काफ़ी हैं। बाद में उनकी सोहबत व ख़िदमत व अभ्यास की कमाई करने से उसको गहरे से गहरे तजर्बे उनकी समरत्थता और महानता के अज़ख़ुद होते जावेंगे और गहरी प्रीत

और प्रतीत उनके चरनों में बढ़ती जावेगी।

शब्द

ज़रा तुम होश में आओ
हंसी और दिल्लगी छोड़ो।
यह ग़फ़लत ज़हरे क़ातिल है
जहां तक हो सके बचना। १।
जहां में आन कर साहब
जहां तक बन पड़े तुम से।
सम्हल कर रास्ता चलना
क़दम को फूंक कर रखना। २।
मिज़ाजे आशक़ी गर है
दरद इश्क़े हक़ीक़ी भी।
मजाज़ी इश्क़ से हट कर
हक़ीक़ी में दख़ल करना। ३।
अलग हो बुत व काबे से
नज़रअन्दाज़ कर सब को।
गली कूचे से नाफ़िर हो
सिराते इश्क़ पर चलना। ४।
फ़हम इदराक कुछ तेरे
मुआविन हो नहीं सक्ते।

यह राह अजबस कि नाज़ुक है
नज़ाकत से क़दम धरना ।५।
मगर सूरत है इक ऐसी
कि मुश्किल हल हो सब जिस से ।
सभी सामां मुयस्सर हों
सहज हो रास्ता कटना ।६।
मिलें खुशबख़्ती से तुम को
कहीं जो मुर्शिदे कामिल ।
क़मर को बांध कर ख़िदमत में
दिल दीदा से जा लगना । ७ ।
मेहर जब उनको आवेगी
शग़ल सुल्तानुल्‌अज़कारी ।
बतावेंगे वह तुम को तब
उसी का फिर शग़ल करना । ८ ।
मेहर से पीर की इक दिन
सफ़र अंजाम हो जावे ।
मिले फिर मंज़िले अबदी
ख़तम हो जीना और मरना । ९।
खुशा बख़्ता कि आख़िर शुद
मरा ईं जुमला दिक़्क़तहा ।
ज़े मेहरे राधास्वामी अम
बदर रफ़्तम अज़ीं रख़ना । १० ।

राधास्वामी मत का हाल ॥

राधास्वामी मत के आचार्य्य ॥

१३—परम पुरुष पूरन धनी हजूर स्वामीजी महाराज जो प्रथम आचार्य्य राधास्वामी मत के थे शहर आगरा मोहल्ला पन्नीगली में अगस्त सन् १८१८ ई० में एक शरीफ़ खत्री घराने में प्रगट हुए। अवायल उमर ही में आपने जो जुक्ती अभ्यास की कि राधास्वामी मत में बतलाई जाती है उसका अभ्यास करना शूरू कर दिया था। जो जो लोग आप के संयोग में आते थे गहरा परमार्थी असर चित्त पर लेकर जाते थे। सन १८६१ ई० में आपने सिलसिला सतसंग आम का जारी फ़र्माया और जून सन् १८७८ ई० तक क़ायम रखकर गुप्त होगये। शहर के बाहर स्वामी बाग़ में आपकी समाध बनी है जहां पर आज कल आप के भतीजे राय बहादुर सेठ सुदर्शन सिंह साहब के ज़ेर निगरानी सतसंग होता है। दूसरे आचार्य्य इस मत के परम गुरू राय सालिगराम साहब बहादुर हुए जिनको चरन सेवक हजूर महाराज के नाम से मौसूम करते हैं। आप ने जून सन् १८७८ ई० से लेकर दिसम्बर सन् १८९८ ई० तक सिलसिला सतसंग का जारी रक्खा। आप की समाध मोहल्ला पीपलमंडी

शहर आगरा में वाक़े है और आज कल ज़ेर निगरानी फ़रज़ंदे ख़ास लाला अजुध्यापरसाद साहब वहां पर बराबर सतसंग होता है। तीसरे आचार्य्य इस मत के रहने वाले शहर बनारस के थे। आपको परम गुरू महाराज साहब के नाम से मौसूम किया जाता है—आपने दिसम्बर सन् १८९८ ई० से १२ अक्तूबर सन् १९०७ ई० तक ज़्याद:तर शहर इलाहाबाद में और कुछ अर्से बनारस में बड़ी धूम धाम से सतसंग जारी रक्खा। आपकी समाध शहर बनारस में स्वामी बाग़ में बनी है। आपके बाद चौथे आचार्य्य राधास्वामी मत के हुए जिन को चरन सेवक परमगुरू हज़ूर सरकार साहब के नाम से याद करते हैं। आपने अक्तूबर सन् १९०७ ई० से लेकर ७ दिसम्बर सन् १९१३ ई० तक बड़े जलाल के साथ कुछ अर्से गाज़ीपुर में बाक़ी हिस्सा मुरार ज़िला शाहाबाद में व मंसूरी वग़ैर: में सतसंग फ़र्माया। आप के ज़माने में हज़ारों नये लोग शरीक सतसंग हुए और बड़ी तरक्क़ी व तक़वियत इस मत को हुई। आज कल सेन्ट्रल सतसंग व हेडक्वार्टर राधास्वामी सतसंग सभा का स्वामीबाग़ शहर आगरा में है। राधास्वामी मत के पैरोकार हज़ूर स्वामीजी महाराज को जो बानी मुबानी इस मत के हैं कुल्ल मालिक हज़ूर राधास्वामी दयाल का अवतार मानते हैं यानी यह कि उस कुल्ल

मालिक की निज धार ने जीवों के उद्धार के निमित्त मनुष्य चोला धारन फ़र्माया और यह चोला छोड़ने पर उस धार की कार्रवाई मार्फ़त दूसरे चोले के होनी शुरू हुई। ऐसे चोले को गुरुमुख कहते हैं। इस चोले को रचने वाली मामूली जीव सुरत नहीं होती बल्कि निज अंस कुल्ल मालिक की होती है जो कि उनकी आज्ञा अनुसार यहां पर जन्म लेकर चोला रचती है ताकि वक्त़ मुनासिब पर कार्रवाई उसकी मार्फ़त जारी होकर जीवों के उद्धार का सिलसिला मुतवातिर जारी रह सके। इस से साफ़ ज़ाहिर है कि राधास्वामी मत पर जो मरदुम परस्ती का इलज़ाम लगाया जाता है वह बे सरोपा है यानी जब तक गुरुमुख चोले में वह निज धार कुल्ल मालिक की प्रवेश न करे कोई शख़्स उसके जानिब मुख़ातिब नहीं होता है। गोयाकि परसतिश व महिमा राधास्वामी मत में सिर्फ़ कुल्ल मालिक की निज धार की है।

१४—एक संतसतगुरू गुप्त होने के बाद जब दूसरे प्रगट होते हैं उस वक्त़ राधास्वामी मत में कोई बाहरी कार्रवाई गद्दी नशीनी वग़ैरः की मुतलक़ नहीं होती। प्रगट होने से मतलब पराये घट में हो जाने यानी घस जाने से है। यानी जब निजधार नये चोले

में कारकुन होती है वह सेवकों को अंतर बाहर परचे देकर रफ़्ता २ चरनों में खेंचती है और होते२ सबके हिरदे में इस नये चोले की महिमा व बुज़ुर्गी समा जाती है। इसलिये कोई ख़ास बाहरमुख कार्रवाई किसी ख़ास समय पर मिस्ल दूसरे मतों या संसारी इन्तिज़ामों के राधास्वामी मत में नहीं की जाती बल्कि हर सतसंगी के लिये गद्दी नशीनी उस दिन से हुई जिस दिन उसको परतीत उस चोले में निजधार की मौजूदगी की प्राप्त हुई।

१५—ज़ाहिर है कि यह इन्तिज़ाम गद्दी बदलने का राधास्वामी मत में बिलकुल अनोखा और अचरजी है और दुनिया में इसकी नज़ीर कहीं नहीं है और बजुज़ उस समरत्थ धार के ऐसी कार्रवाई का ख़ूब-सूरती से सरंजाम पाना ग़ैरमुमकिन है। मन जो कि सख़्त दुशमन परमारथ का है जैसा कि फ़र्माया गया है:—

मित्र न जानो बैरी पूरा। गुरभक्ती से डाले दूरा॥

ऐसे मौक़ों पर तरह२ के रंग दिखलाता है। असल में तो वह समरत्थ दयाल यह अवसर ख़ुद इस मौज से रचते हैं कि मन की पाज खुले और प्रेमी भक्त अपने व दूसरे मनों की दुरदशा देखकर ज़्यादः से ज़्यादः नफ़रत इस पाजी से करने लगें और संत

सतगुरू के चरनों में आयंदः गहरी आरज़ूमंदी के साथ मुख़ातिब हों ताकि इस बैरी से रिहाई की कार्रवाई और भी तेज़ी के साथ अमल में आवे। साथ ही साथ ऐसे मौक़ों पर मालिक अपनी समरत्थता व दयालता का खुल्लम खुल्ला सबूत सब भक्तों को देकर उनके हिरदों में प्रीत और परतीत की नींव और ज़्यादः मज़बूत फ़र्माता है यानी ऐसे समय पर लोग अपने मन के धोखे में आकर इधर उधर ख़्यालात उठाते हैं और कुछ अर्से के लिये जहां पर सच्ची कार्रवाई का आग़ाज़ होता है उससे बिरोध करते हैं मगर जैसाकि बारहा तजर्बे से साबित हुआ देर अबेर सब के सब खोजी भक्तजन चरनों में आ लगते हैं और अपनी करतूत पर निहायत शर्मिंदः होते हैं और बजाय किसी क़िस्म की सज़ा के इनाम में गहरा प्रेम व भक्ती मालिक के दरबार से पाने पर हिरदै में गद २ हो जाते हैं। ज़ाहिर है कि इस क़िस्म की कार्रवाई दो चार क्या बल्कि सौ दो सौ मन मिलकर भी नहीं कर सक्ते और यह एक तरह से सच्चा और पूरा सबूत निज धार की मौजूदगी का और इस मत के जीता जागता होने का है।

राधास्वामी मत की निस्बत जैसे मख़्दुम परस्ती का इलज़ाम बे बुनियाद है इसी तौर पर

समाध परस्ती व पवित्र कुल परस्ती का इलज़ाम भी सरासर लग्व है। चूंकि समाध में पवित्र रज और अस्थियां संत सतगुरू के देह सरूप की रक्खी होती हैं इसलिये समाध की ताज़ीम कमाल दर्जे की की जाती है। इसी तौर पर बवजह खून के रिश्ते के असहाब पवित्र कुल का अदब व सन्मान किया जाता है मगर हर्गिज़ ऐसा अक़ीदा नहीं है कि सिर्फ़ असहाब पवित्र कुल की सेवा करने से या समाध पर मत्था टेकने से जीव का उद्धार हो सक्ता है-उद्धार के लिये आशा केवल सन्त सतगुरू वक्त ही के चरनों में बांधी जाती है, जैसाकि फ़र्माया है :—

राधास्वामी मुरशिद खुदा दिखायें री।
राधास्वामी पीर परस्ती सिखायें री॥
सब को करूं प्रनाम जोड़ कर।
पर कोई नहिं सतगुर समसर॥

बल्कि इस मत में शिरकत से पहिले हर शख्स को जो तीन शर्तें माननी होती हैं उन में से एक शर्त में साफ़ २ इशारा इस तरफ़ है।

शर्तों का बयान॥

१६–राधास्वामी मत में शरीक होने के लिये शर्तें यह हैं:–

अव्वल-गोश्त वग़ैरः से क़तई परहेज़-गोश्त में अंडा, मछली, मछली का तेल, वग़ैरः सब शामिल हैं।

दोयम-शराब व दीगर मुनश्शी अशिया से क़तई परहेज़-इसमें अफ़यून, भांग, चरस वग़ैरः सब शामिल हैं। तम्बाकू व चाय पीने की इजाज़त है।

सोयम-राधास्वामी नाम कुल्ल मालिक का धुन्यात्मक नाम मानना और इष्ट व निशाना हज़ूर राधास्वामी दयाल के चरनों का धारन करना।

शर्त नम्बर १ के संग संग हर सतसंगी पर यह भी फ़र्ज़ है कि जहां तक होसके चित्त कोमल और दयावान करने की कोशिश करे, और शर्त नम्बर २ के संग संग यह भी लाज़िमी है कि सतसंगी किसी स्वार्थी परमार्थी बस्तु या सामान का नशा चित्त में धारन न करे, और शर्त नम्बर ३ के संग संग यह भी ज़रूरी है कि सिवाय सन्त सतगुरू सरूप के जिस में कि हज़ूर राधास्वामी दयाल की निजधार बिराजमान है निज कल्यान की कार्रवाई के लिये मुत्लक़ आशा किसी और जानिब न बांधे।

इन सब बातों के मुताला करने से मालूम होगा कि किस क़दर साफ़ २ हिदायतें इस मत में स्वार्थी परमार्थी रहनी गहनी की निस्बत हैं और मन के लिये कम से कम गुंजायश अपना खेल खेलने के लिये छोड़ी गई है।

जुक्ती का बयान ॥

१७-जो शख़्स इस मत को समझ बूझ लेने के वाद मज़कूरा बाला शरायत क़बूल करलेता है उसको अव्वल जुक्ती सुमिरन ध्यान की बतलाई जाती है-क़रीब दो माह तक उसके मुताबिक़ उसको अमल करके अपना अन्तरी हाल अभ्यास का पेश करना होता है तब अगर मुनासिब होता है तो दूसरी जुक्ती यानी शब्द अभ्यास की तर्कीब बतलाई जाती है-हर किसी को अभ्यास की जुक्तियां पोशीदा रखने का वादा करना होता है-इसके लिये कोई ख़ास क़सम नहीं लीजाती-सिर्फ़ वादा करना ही काफ़ी समझा जाता है क्योंकि अगर कोई शख़्स अपने वादे का ख्याल नहीं रख सक्ता तो क़सम की क्या परवाह करेगा।

अभ्यास में हस्ब दिलख़्वाह कामयाबी हासिल करने के लिये सच्चे अनुराग और मन इन्द्री के भोगों की तरफ़ से किसी क़दर बैराग की ज़रूरत है। परमार्थी के लिये हिदायत है कि जिस दिन से अभ्यास की जुक्ती ले अपना खाना मिक़दार से एक चौथाई कम करदे ताकि तबीयत हल्की रहे और आलस व नींद बवक़्त अभ्यास न सतावें। और यह भी हुक्म है कि संसार की भीड़भाड़ व शोर गुल व परागन्दः ख्यालात से यथा

शक्ती परहेज़ करे ताकि मन अभ्यास के समय बे-मतलब या फ़ासिद ख़्यालात उठाकर समय ख़राब न करने पावे ।

१८–अभ्यास की पहिली जुक्ती ऐसी आसान है कि हर मर्द व औरत बच्चा, जवान, बूढ़ा, बीमार, तन्दुरुस्त खाते, पीते, चलते, फिरते हर समय बख़ूबी कर सक्ता है। इस जुक्ती का यह आशा है कि परमार्थी पहिले अपनी तवज्जह की धार को जो तन मन और उनके पदार्थों में फंसी है किसी क़दर समेट ले और नीज़ अपनी सुरत की शक्ती अभ्यास की मदद से किसी क़दर जगाले। जब परमार्थी को इस में किसी क़दर मुहाविरा हासिल हो जाता है तब जुक्ती शब्द अभ्यास की बतलाई जाती है और साथ ही मुफ़स्सिल भेद ब्रह्मांड व निर्मल चेतन देस के स्थानों के नाम, रूप, लीला व धाम के मुत-अल्लिक़ समझाया जाता है ।

नोट–राधास्वामी मत में तन के देस को पिंड और निर्मल चेतन व मलीन माया देस कहते हैं-मन के देस को ब्रह्मांड और निर्मल चेतन व निर्मल माया देस कहते हैं इन से परे जो सुरत का धाम है उसको निर्मल चेतन देस कहते हैं-वहां माया का नाम व निशान भी नहीं है ।

१९–ज्यूं २ अभ्यासी अभ्यास करता है त्यूं २ उस को इल्म मन की मलीनता और उसके विकारों का बढ़ता जाता है और अपना तन और मन दोनों भारी विघ्न रूप नज़राई पड़ते हैं यानी सुरत को ख़्वाह दिल-ख़्वाह चढ़ने व अभ्यास में लगने नहीं देते-इसकी वजह से सच्चे बिरही के चित्त में बाज़ औक़ात बड़ी घबराहट और वेकली की सूरत पैदा होती है मगर ऐसे मौक़ों पर अक्सर करके गुरू महराज की कृपा से यकायक इम्दाद मिलती है और बजाय थक जाने के अभ्यासी और भी ज़्यादः उमंग व उत्साह के साथ अभ्यास में मसरूफ़ होता है। और प्रीत व प्रतीत हज़ूर राधास्वामी दयाल के चरन कंवल में व नीज़ उनके सन्त सतगुरू स्वरूप में दृढ़ और मज़बूत करता है। होते २ इसको अपना मन कमज़ोर और दुर्बल नज़राई पड़ने लगता है और कुल्ल मालिक की रक्षा का पंजा अपने सिर पर प्रगट दिखलाई देता है और रफ़्ता २ अपनी अलहदगी संसार और उसके सामान से देखता है तब इसको हक़्क़ुल-यक़ीन इस अम्र का होने लगता है कि मुराद मेरे दिल की पूरी हो रही है ॥

देखने में आता है कि दुनिया में इन्सान को पांच या दस मौक़े ही ज़िन्दगी भर में ऐसे होते हैं कि जिन पर ग़ैरमामूली ख़ुशी हासिल हो-मसलन ब्याह शादी का

मौक़ा-इम्तिहान में पास होने का मौक़ा-मुक़द्दमा जीतने का मौक़ा वग़ैरः २। इन मौक़ों के अलावा छिन-भंगी दुख सुख का चक्कर दिन रात चलता रहता है मगर परमार्थी को अभ्यास में साल में दस बीस मर्तबा ज़रूर ऐसा होता है कि हालांकि दुनिया का कोई सामान नहीं मिलता मगर गुरू महाराज की मेहर से तवज्जह की यकसूई ऐसी ग़ैरमामूली होती है और ऐसा ग़ैरमामूली रस व आनन्द अन्तर में आता है कि जिसका कोई वारपार नहीं-बाज़ औक़ात उसका असर तन और मन पर ऐसा होता है कि कई रोज़ तक उसकी तबीयत मस्त और सरशार रहती है। ऐसे तजर्बे दया व मेहर के पाकर अभ्यासी की जो हालत होती है वह पूरी २ बयान में लानी ग़ैरमुमकिन है। एक तरफ़ अपना मन मलीन और ऐबों से भरा हुआ देखता है और अपना आपा निहायत नाक़ाबिल और निबल महसूस करता है दूसरी तरफ़ समरत्थ दयाल की अपार दयालता व सहायता के भरपूर तजर्बे हासिल करता है और सहज में यहां से अपना छुटकारा और मालिक के चरनों में मेल होता हुआ परखता है।

सतसंग का बयान ॥

२०–जैसे अभ्यासियों और महात्माओं के गुप्त हो जाने से भेद सच्चे मारग का और सच्ची करनी मालूम हो गये और उनके बजाय मनमानी कार्रवाइयां जारी हो गईं इसी तौर पर बहुत से अल्फ़ाज़ जो ख़ास ख़ास और निहायत उत्तम मानी में इस्तेमाल किये जाते थे मन-माने मानी में इस्तेमाल होने लग गये मस्लन एक भिखमंगा भी आज कल अपने तईं साध सन्त बतलाता है–ऐसेही लफ़्ज़ "सतसंग" भी संसारी लोगों ने निहायत ज़लील कर दिया और जहां कहीं पर दस पांच आदमी मिल जुल कर किसी धार्मिक विषय पर सभा बिलास करें या पिछले देवताओं या सूरमाओं के क़िस्से कहानी का तज़किरा करें उसको सतसंग के नाम से मौसूम करते हैं। सतसंग के असल मानी सत्तपुरुष का संग है। इसलिये जहां कहीं पर सच्चे सन्त जो औतार सत्तपुरुष का हैं बिराजमान हों या फिर उनके निज सतसंगी जो ज़ेर निगरानी उनके प्रेम और सचौटी के साथ अभ्यास करते हों सच्चे व मालिक का निर्णय व कीर्तन और उससे मिलने के सच्चे रास्ते और जुगत का बयान करें उस संगत का नाम असल सतसंग है। ऐसे संग व सोहबत के फ़ायदों का बर्नन जितना भी किया जावे थोड़ा है।

कबीर साहब ने फ़र्माया है:—

शब्द

मैं तो आन पड़ी चोरन के नगर सतसंग बिना जिया तरसे।
इस सतसंग में लाभ बहुत है तुरत मिलावे गुरु से।
मूरख जन कोई सार न जाने सतसंग में अमृत बरसे।
शब्द सा हीरा पटक हाथ से मुट्ठी भरी कंकर से।
कहें कबीर सुनो भाई साधो सुरत करो वाहि घर से।

ऐसे संग साथ में हाज़िर रह कर इन्सान सहज में अपने मन की तमाम शंकाएं दूर कर सक्ता है और चित्त की किसी क़दर सफ़ाई व निश्चलता हासिल करके सहूलियत के साथ इस संसार सागर से तरने व कुल्ल मालिक से मिलने की जुक्ती की कमाई कर सक्ता है।

२१—अलावा इसके अगर वाक़ई कहीं पर सच्चे साध सन्त मौजूद हैं तो जैसा कि आज कल सायंस (Science) भी मानता है और तस्वीरों में पिछले वक्तों के औतारों के मुखड़े के गिर्द दिखलाया भी जाता है उनके रोम रोम से पवित्र चेतनता की धार निकलती होगी। मामूली इन्सान से जो धार निकलती है वह मलीन होती है क्योंकि उसका हृदय मलीन है और उसमें बिकारी अंग प्रबल हैं। मगर साध सन्त का हृदय निहायत पवित्र होने के अलावा उनकी सुरत

निहायत चेतन है और सत्तपुरुष से जो महा बिशेष चेतन के भंडार हैं मेल कर रही है इस लिये उनके शरीर से जो "औरा" निकलता होगा उसकी पवित्रता का क्या अन्दाज़ा हो सक्ता है। पस ऐसे महा पुरुष के "औरे" की धार ही में अश्नान करते रहने से सहज में बिकारी अंगों का मर्दन हो सक्ता है और इसकी वजह से कमाल सहूलियत अभ्यास की जुक्ती की कमाई में हो सक्ती है।

२२–यह देखने में आता है कि मस्ख़रों की सोहबत में बैठने उठने से थोड़े ही दिनों में इन्सान मस्ख़रा बन जाता है और जुवारियों और ठगों की सोहबत में बैठ कर इन्सान उनकी आदात सीख लेता है जैसा कि कहा है:-
"संग साथ सोहबत का असर बहुता नहीं तो थोड़ाथोड़ा"
और शेख़ सादी का भी कलाम है:–

"सगे असहाबे कहफ़ रोजे चन्द
पये नेकां गिरिफ़्त व मर्दुम शुद।
पिसरे नूह बा बदां बिनिशस्त
ख़ान्दाने नुबूवतश् गुम् शुद।"

यानी नेकों की सोहबत में कुछ रोज़ बैठने से कुत्ता भी इन्सान बन गया और हज़रत् नूह के बेटे ने बदों की सोहबत में बैठकर अपने ख़ान्दान से नुबूवत को खो

दिया। इसलिये जिस किसी संग सोहबत में हस्ब मज़कूरा बाला कुल्ल मालिक की महिमा और उनसे मिलने की जुक्ती व उसके मुतअल्लिक़ निर्नय बिचार और नीज़ उसका अभ्यास शबोरोज़ जारी हो उस संग सोहबत में बैठने से किसक़दर मदद परमार्थी कार्रवाई करने में मिल सक्ती है उसका हर कोई दिल में विचार कर सक्ता है। अलावा इसके आज कल जो ज़ोर विलायत के मुआफ़िक़ ऐसे स्कूल व कालेज बनाने पर दिया जाता है जहां तालिबइल्मों के रहने का भी इन्तिज़ाम हो वह इसी ग़रज़ से है कि विद्यार्थी दुनिया के नापाक गिर्दोनवाह से बचकर ऐसी हवा में बास करें जहां पर सिवाय पढ़ने लिखने के किसी बात का तज़किरा न हो ताकि सहज में वह अपनी तवज्जह एकसू करके कामयाबी हासिल कर सकें। इसी तौर पर परमार्थ के चाहने वालों के लिये भी सच्चे सतसंग की बहुत ज़रूरत है।

२३–अगर ग़ौर से देखा जावे तो मन की यह आदत है कि यातो परमार्थ से सोना चाहता है यानी थक थका कर इधर उधर का बहाना पेश करके ग़ाफ़िल होना चाहता है या फिर जोश व ख़रोश में भरकर दौड़ धूप करना चाहता है। ज़ाहिर है कि दोनों हालतों से परमार्थ का नुक़सान मुतसव्विर है

इसलिये निहायत ज़रूरी है कि हर एक अनुरागी भक्त जन इन विघ्नों से बचने की फ़िक्र करे। सहज जुक्ती इनसे बचने की सिर्फ़ सतसंग है—वहां पर हाज़िरी देने और वहां की बात चीत सुनने से मन पर इस क़िस्म की चोट व रोक लगती रहेगी जिस की वजह से यह न तो सोने ही पावेगा और न बहने ही पावेगा और सहज में मध्य की चाल जो सच्चे परमार्थ में निहायत ज़रूरी है चलता रहेगा। मन को भड़काने और संसार में बहाने वाले बहुत हैं और संसार के भोग बिलास या मान बड़ाई में उलझा कर सच्चे परमार्थ से ग़ाफ़िल करा देने वाले भी बहुत हैं मगर इसको जगाकर मध्य की चाल चलाना बग़ैर सुरतवन्त पुरुष के यानी जिस की सुरत यानी रूह जगी है और जो ख़ुद अपने मन पर पूरा क़ाबू किये हुए है किसी से हर्गिज़ २ मुमकिन नहीं है।

यह सब फ़ायदे तो सतसंग के हैं ही मगर इन सब से बढ़कर फ़ायदा यह है कि इसमें शिर्कत करने से जीव को मौक़ा साध सन्तके चरनों में प्रीत प्रतीत बढ़ाने का भरपूर मिलेगा-चूंकि अन्तर में अभ्यास भी उन ही की मदद से बन सक्ता है और बाहर के बिषयों से नफ़रत और तन व मन के बंधनों का टूटना उन ही की प्रीत से मुमकिन है इसलिये सत-

संग की हाज़िरी देकर हर सतसंगी सहूलियत के साथ अन्तर बाहर मुनासिब परमार्थी कार्रवाई करके अपना भाग जगा सक्ता है ।

सतसंग के मज़कूरा बाला फ़ायदों पर ग़ौर करने से मालूम होगा कि सन्तों का सतसंग करने ही से सच्चे परमार्थ का कमाना और अभ्यास की जुक्ती पर अमल करना कैसा सहल हो जाता है और संसार से अलहदगी और मालिक के चरनों से मेल किस क़दर आसान हो जाता है ।

राधास्वामी सतसंग का बयान ॥

२४—अब थोड़ा सा बयान उस कार्रवाई का करते हैं जो राधास्वामी मत में सतसंग के वक़्त संतसतगुरू के चरनों की मौजूदगी में की जाती है—असल में यह समय इस मत में इबादत व पूजा का है और इसमें शिर्कत करने से सेवकों को पूरा मौक़ा हासिल करने रूहानी तालीम व अभ्यास की कमाई का मिलता है । सन्त सतगुरू जो मुखिया यानी कराने वाले इस कार्रवाई के होते हैं ज़रा ऊंची जगह पर बिराजते हैं ताकि सब हाज़िरीन सतसंग उनके कलामको आसानीसे सुन सकें। मर्द व औरत दोनों सतसंग के वक़्त हाज़िर रहते हैं

मगर स्त्रियां मर्दों से बिलकुल अलग बैठती हैं और उनके लिये पर्दे का पूरा इन्तिज़ाम रहता है। बाहरी लोग बिला ख़ास तौर पर इजाज़त हासिल करने के शरीक सतसंग नहीं हो सक्ते। इजाज़त सिर्फ़ ऐसे लोगों को दी जाती है जो जिज्ञासू की रीत से सन्त मत के असूलों को समझना व सीखना चाहें। ख़ास वजह बाहरी लोगों को मना करने की यह है कि अक्सर करके सतसंग के वक्त और आगे पीछे सतसंगी लोग शब्द अभ्यास भी करते हैं और यह अभ्यास ग़ैर लोगों की मौजूदगी में नहीं किया जा सक्ता है।

सब से अव्वल मंगलाचरन का पाठ होता है और यह सब सेवक मिलकर गाते हैं। मंगलाचरन में वर्नन हज़ूर राधास्वामी दयाल की उस अपार बख़्शिश का है जो उन्होंने जीवों के हाल पर इस सत्य मारग को प्रगट करके फ़र्माई और नीज़ गुनानुवाद उस अपार दया का है जो वह सदा अपने सर्नागत बच्चों पर अन्तर में उनको निर्मल चेतन देस (जोकि धाम परम और अबिनाशी आनन्द का है) की तरफ़ चलने में फ़र्माते हैं। सब से आख़ीर में इसी तौर पर एक बिनती का पाठ होता है मगर मंगलाचरन से बिनती का मज़मून मुख़्तलिफ़ होता है। इसमें यह प्रार्थना की गई है कि वह मालिक दयाल अपने तमाम कमज़ोर

और नादान बच्चों की पूरी सहायता फ़र्मावें क्योंकि बग़ैर उनकी सहायता के सच्चे उद्धार की कार्रवाई करने में जीव क़तई लाचार है। और साथ२ यह मांग होती है कि सब के हृदय में सच्चा प्रेम कुल्ल मालिक के चरन कमल की जानिब जागे क्योंकि बग़ैर सहायता व प्रेम की प्राप्ती के कुल्ल मालिक के दर्शन की प्राप्ती और उनके परम पवित्र चरनों में बास मिलना ग़ैर-मुमकिन है।

बीच के वक़्त सन्तों की रची हुई बानी का (जो कि नज़म व नसर दोनों में है) सिलसिलेवार पाठ होता है। इस बानी में जो बात सहज में समझ में न आने वाली हो सन्त सतगुरू उसके अर्थ बयान फ़र्माते हैं या ख़ास चर्चा यानी उपदेश उस मज़मून पर फ़र्माते हैं। इसके अलावा और भी अक्सर उपदेश किये जाते हैं जिन में या तो सन्त मत के असूलों की या अभ्यास के मुतअल्लिक़ बातों की बादलील और इल्मी तौर पर व्याख्या की जाती है। जितने वक़्त बानी का पाठ होता रहता है सतसंगी लोग उस समय संग २ जहाँ तक बन पड़ता है अपने अभ्यास ख़ासकर ध्यान की कार्रवाई में मसरूफ़ रहते हैं क्योंकि उस वक़्त बवजह मौजूदगी सन्त सतगुरू व बमदद अनभवी मज़ामीन उस बानी के जिसका पाठ वह सुनते हैं सतसंगियों को कमाल सहूलियत इस अभ्यास

में मिलती है। साथ ही साथ कार्रवाई मन की निर्मलता व चित्त की शुद्धता की जारी रहती है। तमाम बुराइयों की जड़ अज्ञान है जिसका तिमिर बुद्धी पर छाये रहने से बुरे कामों व हरकतों की बुराई दीख नहीं पड़ती है। साध सन्त के सन्मुख होने से यह अज्ञानता किसी क़दर दूर हो जाती है और उनके परम पवित्र चरन कमल की मौजूदगी ही से बाज़ औक़ात सतसंगी लोगों को अपनी कोर कसरें दरसने लगती हैं और उनके निस्बत सच्चा और गहिरा पचतावा दिल में पैदा होता है। अलावा इसके सतसंग के वक़्त जो उपदेश होता है उससे अन्तर की सफ़ाई विशेष होती है और सङ्गर हाज़िरीन को मौक़ा निर्नय शक्ती के जगाने के लिये आला तालीम हासिल करने का मिलता है जिसकी मदद से वह रफ़ः २ इस क़ाबिल बन जाते हैं कि सहज में अपने मन की चाल को पूरे तौर पर निहारने लगें और निरख परख करके अपने मनकी हर कार्रवाई के अन्तर के अन्तर सन्तों की शिक्षा के विरुद्ध जो कोई बासना छिपी हो उसको छांट सकें। सन्त सतगुरू की मौजूदगी और उनकी चर्चा व सतसंग की दीगर कैफ़ियत से सतसंगी के परमार्थी उमंग व प्रेम पर भी बड़ा असर पड़ता है और ज्यूं ज्यूं उसका अभ्यास बढ़ता जाता है सतसंग में बैठने से उसके अन्तर इस दर्जे का प्रेम जागता है कि

यह गदगद और सरशार होजाता है और संसार के भोग बिलास उसको तुच्छ नज़राई पड़ते हैं और सत-संग की सब कार्रवाई एकदम मस्त व मगन करने-वाली दरसती है।

परशाद व चरनामृत वग़ैरः का बयान ॥

२५—बाज़ औक़ात सतसंगी लोग सन्त सतगुरू के सन्मुख हार व मिठाई परशाद के लिये पेश करते हैं-वह उनको स्पर्श करके पवित्र फ़र्माते हैं-बाद में यह चीज़ें कुल जमाअत में तक़्सीम कर दी जाती हैं मगर चूंकि तादाद हाज़िरीन सतसंग की दिन बदिन बढ़ती जा रही है और इन कार्रवाइयों के सरंजाम देने के लिये बहुत समय दरकार होता है इसलिये आज कल इनका रिवाज कमी पर है।

२६—सब कोई जानता है कि ज़हरीले जानवर सांप कीड़े वग़ैरः अगर किसी खाने पीने की चीज़ को छू दें तो उसमें ज़हर का असर आजाता है और उस चीज़ के इस्तेमाल करने से खानेवाले पर ज़हर का असर चढ़ जाता है। नीज़ यह भी तजर्बा है कि अगर किसी खाने की चीज़ पर किसी की कुदृष्टी पड़ जावे जिसको नज़र का लग जाना बोलते हैं तो उस चीज़ में कुदृष्टी का असर आजाता है और या तो वह चीज़ गिर के ज़ाया

हो जाती है या अगर उसको इस्तेमाल किया जावे तो खानेवाले को नुक़सान पहुंचता है। छोटे छोटे बच्चे नज़र लगने से फ़ौरन बीमार हो जाते हैं। मतलब इस बयान से यह है कि यह तजर्बे से साबित है कि जानवरों और मनुष्यों के छूने व दृष्टी वग़ैरः का असर खाने पीने की चीज़ों वग़ैरः पर पड़ता है और चूंकि यह असर स्थूल घाट पर होता है इसलिये ऐसी चीज़ों के इस्तेमाल करने से इस्तेमाल करनेवाले के तन पर असर आता है। इससे यह नतीजा निकालना बेजा न होगा कि साध सन्त महात्मा के किसी वस्तू के छूने या उस पर दृष्टी डालने से ज़रूर असर उस वस्तु पर पड़ता है और चूंकि वह असर रूहानी घाट का है इसलिये इस्तेमाल करने-वाले की आत्मा तक ज़रूर रूहानी असर उन चीजों के इस्तेमाल से पहुंचता है। चूंकि साध सन्त महात्मा के हाथ पांव वग़ैरः से निर्मल चेतन धार हरदम जारी रहती है इसलिये उनके चरन धोकर पीने या उनका इस्तेमाली वस्त्र पहनने से भी भारी रूहानी लाभ होता है।

इसी वजह से तो हिंदुओं में रिवाज ठाकुरजी का चरनामृत व परशाद लेने का व देवी जी व हनूमान जी का परशाद बांटने का और बनारस के गोपाल मंदिर वग़ैरः का परशाद ख़रीद कर खाने का जारी

हुआ । इसी तौर पर अहले इसलाम में काबा शरीफ़ के कपड़े व चाह ज़मज़म् के पानी का इस्तेमाल और ईसाइयों में सनीश्चर के दिन सेक्रामेन्ट Sacrament) खाने का (जिसको हज़रत मसीह का खून व गोश्त तसव्वुर करते हैं) तरीक़ जारी है । और सिक्खों व कबीर पंथियों और दूसरे अनेक मतों में बराबर परशाद तक़सीम किया जाता है । ज़ाहिर है कि जब कृष्ण महाराज या देवी देवता या दूसरे महापुरुष देह रूप में मौजूदथे तो उनदिनोंमें लोग आजकलकी तरह फ़रज़ी भोग लगवाकर चरनामृत व परशाद न लेते होंगे बल्कि खुद कृष्ण महाराज व हज़रत मसीह व गुरू साहिबान भोग लगाकर बाद में परशाद तक़सीम कराते होंगे । इसलिये राधास्वामी मत में जो सिलसिला हार परशाद वग़ैरः का जारी है यह कोई नवीन कार्रवाई नहीं है और न ही जैसा कि अनजान मोतरिज़ लोग कहते हैं महज़ लोगों का ईमान बिगाड़ने के लिये जारी की गई है बल्कि ज़मानए क़दीम से—जब से कि महात्माओं की आमद हुई—इसका रिवाज बराबर है और आला दरजे के रूहानी उसूल पर इसका इनहिसार है ।

सेवा ॥

२७—हाफ़िज़ ने कहा है:—

ब्मै सज्जादः रंगीं कुन गरत् पीरे मुग़ां गोयद।
कि सालिक बेख़बर नबुवद ज़िराहोरस्मे मंज़िलहा॥

यानी अगर मुर्शिद यानी संत सतगुरू तुमको हुक्म करें कि आसन को शराब से तर करो (हालांकि फ़ुक़रा के मज़हब में शराब के नज़दीक तक जाने की इजाज़त नहीं है) तो तुम फ़ौरन उनके ऐसे हुक्म की भी तामील कर डालो क्योंकि संत सतगुरू ख़ूब जानते हैं कि किस मौक़े पर क्या कार्रवाई करनी जायज़ है। इस वास्ते जब मुर्शिदे कामिल यानी पूरे गुरू मिल जावें और उनपर निश्चय आजावे तो हरएक परमार्थी पर फ़र्ज़ है कि दीन आधीन होकर सच्चे दिल से उनकी सेवा व ख़िदमत बजा लावे जो काम कहा जावे दिल में उसकी ज़रूरत व मन्फ़-अत की निस्बत कोई शंका न लावे बल्कि बदिल व जान उस सेवा की अन्जामदेही में मसरूफ़ हो।

दुनिया में देखिये अगर करने से पहिले हर काम के निस्बत हुज्जत उठाई जावे और "क्यों" "किस वास्ते" का जवाब तलब किया जावे तो ऐसा करने से जो गड़बड़ संसार में मच सक्ती है उसका हद व हिसाब लगाना मुश्किल है। मस्लन् उस्ताद बच्चे को पढ़ाना

शुरू करे और हुक्म दे कि कहो अलिफ़-बच्चा कहे कि क्यों अलिफ़ जीम क्यों नहीं—या लड़ाई लग रही हो और कमान अफ़सर हुक्म गोली मारने या धावे का दें और सिपाही लोग ज़िद्द करें कि पहिले मन्फ़अत इसकी बतला दीजिये पीछे हम तामील करेंगे वग़ैरः २। इसी तौर पर अनेक प्रकार की दिक़्क़तें पैदा होंगी जिनसे दुनिया का काम चलना ग़ैरमुमकिन हो जावेगा। इसलिये संतों के मत में हुक्म है कि खोजी परमार्थी को चाहिये कि शरीक होने से पहिले पूरे तौर पर रद्द व कद्द यानी निर्णै विचार मत के उसूलों व कार्रवाइयों के निस्बत करे मगर जब निश्चय आजावे तब मन की इस क़िस्म की चंचलता को दूर करके हमा तन सेवा व सतसंग वग़ैरः में मसरूफ़ हो। इस तरीक़े अमल से ही उम्मेद हुसूल मुराद की कीजा सक्ती है यानी जैसा कि कहा है:-

सेवा करे सो मेवा पावे।

२८—सब लोग जानते हैं कि जहां पर ग़रज़ अटकती है वहां पर इन्सान दौड़ २ कर जाता है और हर क़िस्म की ख़िदमत बजा लाता है मस्लन् तहसीलदारों कलक्टरों कमिश्नरों वग़ैरः के दर्वाज़े पर सुबह शाम अहलकारों व दीगर लोगों की भीड़ लगी रहती है—हकीमों डाक्टरों के मकान पर बीमार लोग बराबर हाज़िरी देते हैं और हर कोई यही कोशिश करता है कि

किसी तरह से हाकिम व हकीम को ख़ास तवज्जह अपने ऊपर ले और इसके लिये हर तरह की ख़िदमत उनकी बजा लाता है और तरह २ के तोहफ़े तहायफ़ पेश करता है और देखने में आता है कि कुछ अर्से ऐसा करते२ एक तरह का सिलसिला मुहब्बत का हाकिम व हकीम से क़ायम करके इन्सान मस्त व मगन होता है यानी हाकिम की दोस्ती से आशा दुनिया में इज्ज़त रुतबा तरक्क़ी या दुश्मनों से बचाव वग़ैरः की बांध कर और हकीम की दोस्ती से उम्मेद वक्त़ बेवक्त़ दुख दर्द की हालत में मदद पाने की करके अपने भाग सराहता है। जानवर तक सुबह शाम घास दाना मिलने की वजह से तन तोड़ कर ख़िदमत अपने आक़ा की करते हैं और जो जानवर सरगर्मी से मेहनत करते हैं उन से आक़ा प्यार करने लगता है और बेमतलब उनको तक़लीफ़ नहीं देता है बल्कि उनके खाने पीने व आराम की ख़ास फ़िक्र करता है। इसी तौर पर निहायत लाज़िमी हुआ कि संत सतगुरू की जो कि वक्त़ के हाकिम व हकीम हैं यानी जिनकी मदद के वग़ैर न कोई इस संसार की क़ैद से छूट सक्ता है और न ही अपने मन इन्द्रियों के रोग से नजात पा सक्ता है प्रेमी परमार्थी अव्वल तन मन धन से सेवा करे और उनकी प्रसन्नता हासिल करे और करते २ उनसे रिश्ता मुहब्बत व प्रीति का

क़ायम करे। अब उस प्रीति लगाने का फ़ायदा सुनिये।

२९—जिस किसी से इन्सान की प्रीति लग जाती है देखने में आता है कि उसकी दिलजोई के लिये वह दिन और रात फ़िक्र करता है और जो कुछ बासना प्रीतम के अंदर प्रबल होती है फ़ौरन उसके पूरा करने के लिये जतन करता है मस्लन बच्चे व औरत के लिये सौ तरह का हर्ज मर्ज करके मिठाई कपड़ा ज़ेवर वग़ैरः मुहैया करता है—जिस बस्तु को प्रीतम चाहता है उसी को यह भी पसंद करता है—जो बस्तु प्रीतम को बुरी लगती है यह भी उससे दिली नफ़रत करता है-जहां पर प्रीतम क़याम करता है वहीं पर रहने की यह भी आरज़ू करता है-जिधर को प्रीतम जाता है संग २ जाने में यह भी कमाल दर्जे की ख़ुशी महसूस करता है और उसके पीछे २ जाता है—कुत्ता बंदर वग़ैरः जानवर तक ऐसा ही करते हैं। इसी तौर पर अगर किसी शख़्स की सच्ची प्रीत संत सतगुरू से लग जावेगी तो वह भी हरदम उनकी रग़बत व नफ़रत को मद्दे नज़र रक्खेगा और चूंकि वह सच्चे आशिक़ कुल्ल मालिक के हैं और सख़्त नफ़रत इस मलीन संसार से करते हैं इसलिये उस प्रीत करने वाले के अन्दर भी सहज में संसार से बैराग व नफ़रत और मालिक के चरनों में प्यार व मुहब्बत पैदा होती जावेंगे और होते २ संत सतगुरू की अंतरी

बासना इस के चित्त में बसकर यह गहिरा और सच्चा परमार्थी बनकर निहायत आसानी के साथ इस भौजल से पार हो कुल्ल मालिक के चरनो में बासा पावेगा।

३०—ज़रा ग़ौर करने का मुक़ाम है कि यह महा दरिद्र भिखमंगा जीव तन व मन के तुच्छ भोग बिलास के लिये दिन रात तरसता हुआ—त्रिय तापों की अग्नी में हरदम जलता हुआ—अगर मन इन्द्री के रोगों से सड़े हुए और गले हुए तन को संत सतगुरू की सेवा में पेश करता है तो कौन सा एहसान करता है—सच्च तो यह है कि वह समरत्थ दयाल इसपर रहम करके इसकी सोहबत गवारा फ़र्माते हैं और इसका भाग जगाने के निमित्त थोड़ी बहुत सेवा इस से लेते हैं और इस तरीक़ से इसकी तवज्जह अपने में बांध कर संसार से इसको उपराम करते हैं और अभ्यास की जुक्ती की कमाई कराके इसको तन व मन से आज़ाद फ़र्माते हैं। ऐसी सूरते हाल में यह तर्क उठाना कि संतसतगुरू इसके धन या सेवा के मोहताज हैं किस दर्जे की नादानी की बात ठहरती है-फ़र्माया है:-

गुरु नहिं भूखा तेरे धन का, उन पै धन है भक्ति नाम का॥
पर तेरा उपकार करावें, भूखे प्यासे को दिलवावें॥
उनकी मेहर मुफ़्त तू पावे, जो उनको परसन्न करावे॥

३१-अब आगे हजूर राधास्वामी दयाल का फ़र्माया हुआ एक शब्द दर्ज करते हैं जिसमें परमार्थ की प्राप्ति का तरीक़ा निहायत खूबसूर्ती के साथ संक्षेप में बरनन फ़र्माया गया है:-

शब्द।

प्रेमी सुनो प्रेम की बात। टेक।
सेवा करो प्रेम से गुरु की, और दर्शन पर बल २ जात॥
बचन पियारे गुरु के ऐसे, जस माता सुत तोतरि बात॥
जस कामी को कामिन प्यारी, अस गुरुमुख को गुरु का गात॥
खाते पीते चलते फिरते, सोवत जागत बिसर न जात॥
खटकत रहे भाल ज्यों हियरे, दर्दी के ज्यों दर्द समात॥
ऐसी लगन गुरू संग जाकी, वह गुरुमुख परमारथ पात॥
जब लग गुरु प्यारे नहिं ऐसे, तब लग हिर्सी जानो जात॥
मनमुख फिरे किसी का नाहीं, कहो क्योंकर परमारथ पात॥
राधास्वामी कहत सुनाई, अब सतगुरु का पकड़ो हाथ॥

यानी ऐ प्रेम के तलबगार! सुनो प्रेम कैसे प्राप्त हो सक्ता है-अव्वल पूरी तवज्जह लगाकर यानी दिल व जान से वक़्त के गुरू की सेवा करो और सतसंग की हाज़िरी देकर गहिरे प्यार के साथ उनके दर्शन करो-सतसंग में बैठकर उनकी बात चीत यानी उनके कलाम को ग़ौर के साथ सुनो और जैसे मां अपने छोटे बच्चे

की तोतली बात चीत को बार २ ख़्याल में लाकर हरषती है इसी तौर पर तुम भी गुरू महाराज के बचन बानी को बार २ मनन करके रस लो। इस तौर पर अपने अंतर में गुरू महाराज की निस्बत ऐसा प्यार और इश्क़ पैदा कर लो जैसा कि पुरुष अपनी स्त्री के संग करता है यानी खाते पीते चलते फिरते सोते जागते कभी उनकी सूरत तुम्हारे चित्त से बिसरे नहीं और हर हाल में दुनिया का काम काज करते हुए भी अपनी तवज्जह उनके चरनों में लगाये रहो। सिर्फ़ इतना ही नहीं बल्कि यह कार्रवाई खटक के साथ करो-साधारन तौर पर नहीं-यानी जैसे किसी दर्दमंद के पीड़ उठती है इस तौर पर उचक २ कर तुमको उनके चरनों की याद आनी चाहिये और बग़ैर उनका अंतर बाहर दर्शन प्राप्त किये के तुमको कल नहीं पड़नी चाहिये। फ़र्माया कि जिस किसी की गुरू महाराज के संग इस तरह की सच्ची और गहिरी प्रीति होगी यानी मुख्य धार जिसकी तवज्जह को उनके चरनों की जानिब मुख़ातिब होगी वही गुरुमुख है और उसी को परम अर्थ यानी प्रेम की दौलत नसीब होगी। और जब लग किसी को इस तौर की प्रीति पैदा न होगी तब तक वह हिर्सी है यानी दूसरों की उच्च गती देखकर या प्रेम की दौलत की महिमा सुनकर महज़ मुंह से राल बहाता है मगर उसकी प्राप्ती के लिये

मुनासिब जतन नहीं करता है और मुख्य धार अपनी तवज्जह की मन के जानिब बहाता है और इसलिये किसी मसरफ़ का नहीं है भला उसको कैसे परमार्थ की दौलत मिले। हुज़ूर राधास्वामी दयाल यह समझा कर और गुरुमुखता की सच्ची दशा का बरनन करके फ़र्माते हैं कि अगर तुमको शौक़ इस भारी दौलत के हासिल करने का है तो वक़्त के सतगुरु का हाथ पकड़ लो–अब भी मौक़ा है–यह महज़ ख़्याली या ज़बानी बात चीत नहीं है बल्कि पूरा औसर इसके लिये अब भी मौजूद है।

तितिम्मा ।

३२-यहां तक जो कुछ बयान हुआ उससे मालूम होगा कि राधास्वामी मत सच्चा कुदरती मज़हब है और जुक्ती उसके अभ्यास की व दीगर कार्रवाई जो इस में जारी है बवजह कुदरती होने के निहायत आसान और सुगम है-और यह भी मालूम होगा कि पिछली टेक व रसूम और ज़बानी जमा ख़र्च को जो कि दूसरे मतों की जान हैं इसमें सख़्त नापसन्द किया गया है और ज़ोर इस बात पर दिया गया है कि वक़्त के पूरे गुरू की मदद से और सच्चे अभ्यास की कमाई से सुरत यानी रूह को तन और मन से और नीज़ तन और मन के देस से न्यारा करके अपने सोत पोत में जिसको कि मालिके कुल्ल कहते हैं पहुंचाया जावे ताकि अमर और अविनाशी परम आनन्द की प्राप्ती हो और दुख से सदा के लिये निवृत्ती हो ।

३३-पिछले ज़माने में जितने औतार हुए उनमें से हस्ब फ़र्मान उनके कोई ख़ुदा के पुत्र थे-कोई ख़ुदा के पैग़म्बर थे और कोई उनकी कला थे। पारब्रह्म पद और उसके परे के भेद की निस्बत वेद भगवान ने "नेत नेत" यानी "यहीं ख़ातमा नहीं है," "यहीं ख़ातमा नहीं है"

करके छोड़ दिया है। इसी तौर पर जैनियों के इष्ट देव तिर्थंकर व महात्मा बुद्ध के भी क़ौल के बमूजिब उनकी आमद निर्वान पद (जो कि सन्तों का ब्रह्म पद है) से हुई। गुरू गोबिन्द सिंह साहब ने भी फ़र्माया है:—

जे मोको परमेश्वर उच्चरिहैं। ते सब घोर नरक में पड़िहैं॥
मोको दास तिन्हां का जानो। या में भेद न रंच पिछानो॥

किसी ने अपने तईं कुल्ल मालिक या सत्त करतार या उनका औतार नहीं कहा। ज़ाहिर है कि वह बजुज़ अपनी असल गति के दूसरी बात क्यों बतलाते। बरख़िलाफ़ इसके हजूर राधास्वामी दयाल ने सम्पूरन भेद पिंड, ब्रह्मांड और निर्मल चेतन देस का मुसलसल बयान फ़र्माकर यह समझाया कि जैसे इन्सान के छटे चक्र पर सुरत यानी आत्मा की बैठक है इसी तौर पर बाहर में पिंड के छटे चक्र में पिंड के धनी का बास है और ऐसे ही ब्रह्मांड के छटे कँवल में ब्रह्मांड के धनी की बैठक है और इसी तौर पर निर्मल चेतन धाम के छटे पदम में कुल्ल मालिक का बास है और उसको राधास्वामी अनामी पद कहते हैं।

ज़ाहिर है कि सिवाय कुल्ल मालिक के या उनके स्थान से आये हुए पुरुष के कोई धुर धाम तक का भेद न

दे सक्ता था। हजूर राधास्वामी दयाल ने फ़र्माया हैः-

देख पियारे मैं समझाऊं रूप हमारा न्यारा।
वह तो रूप लखे नहिं कोई जब लग दूं न सहारा।
करनी करो मार मन डालो इन्द्री रोक दुवारा।
सुरत चढ़ाय गगन पर धावो सुन्न सिखर के पारा।
सत्त पुरुष का रूप दिखाऊं अलख अगम दरसारा।
ताके आगे राधास्वामी वह निज रूप हमारा।

कबीर साहब ने जिनको कुल्ल मालिक का निज पुत्र माना जाता है फ़र्माया हैः-

कहें कबीर हम धुर घर के भेदी लाये हुक्म हजूरी।

यानी कबीर साहब जो कि धुर घर के भेद से वाक़िफ़ हैं वह भी हजूरी हुक्म यानी कुल्ल मालिक का हुक्म लेकर आये हैं-चुनांचे उन्होंने पिंड ब्रहमांड के कुल स्थानों और दयाल देस के पांचवें पद यानी अगम लोक तक का मुफ़स्सिल भेद अपनी बानी में फ़र्माया है। और राधास्वामी पद की निस्बत यह कहा हैः-

कबीर धारा अगम की सतगुरु दई लखाय।
उलट ताहि सुमिरन करो स्वामी संग मिलाय॥

एक तौर पर पिछले कुल सच्चे मज़हबों के बानी मुबा-नियों के कलाम पर निर्पक्ष ग़ौर करने से साफ़ नतीजा निकलता है कि सिवाय हजूर राधास्वामी दयाल के कोई कुल्ल मालिक का औतार न था।

३४–एक और बात ग़ौर के क़ाबिल है कि पिछले ज़माने के आचार्यों व औतारों ने अपनी पुस्तकों में यह फ़र्माया कि हम ख़ातिमुल्मुर्सलीन हैं यानी हमारे बाद अब कोई औतार न होगा अलबत्ता क़यामत जब नज़दीक आवेगी तब हम अपनी उम्मत यानी पैरोकारों की रक्षा के निमित्त फिर आवेंगे । चुनांचे सिक्खों के हां कलग़ी औतार, मुसलमानों व ईसाइयों के हां पैग़म्बर साहब व हज़रत मसीह की दुबारा आमद व बौद्धों के हां महात्मा बुद्ध का दुबारा औतार लेने और हिन्दुओं के हां घोर कलयुगके समयके बादही सतयुग के आग़ाज़ होने के बाबत बराबर पुस्तकों में ज़िक्र है मगर बमुक़ाबिले इस के कुल्ल मालिक हजूर राधास्वामी दयाल का फ़र्मान है कि जब तलक कुल रचना का उद्धार न हो जावेगा निज धार यहां से हर्गिज़ गुप्त न होगी । ज़ाहिर है कि सिवाय कुल्ल मालिक के औतार के कुल रचना के उद्धार का कौन ज़िम्मा ले सक्ता था-इस अम्र पर भी ग़ौर करने से यह नतीजा निकलता है कि सिवाय राधास्वाली दयाल के कोई औतार कुल्ल मालिक का नहीं हुआ ।

३५–इस मौक़े पर यह सवाल किया जा सक्ता है कि क्या वजह है कि कुल्ल मालिक का औतार पहिले न

हुआ और ख़ास इसी समय में हुआ । इसका जवाब अव्वल तो यही हो सक्ता है कि चाहे किसी समय में औतार होता उस समय की निस्बत भी यही सवाल किया जा सक्ता था यानी उसके आगे पीछे क्यों न हुआ मसलन् बजाय इस वक्त के अगर सतयुग में होता तो सवाल हो सक्ता था कि त्रेता द्वापर या कलयुग में क्यों न हुआ वग़ैरः वग़ैरः । दूसरे ख़्याल करना चाहिये कि हिन्दुओं के हां ज़िक्र है कि कच्छ मच्छ बाराह वग़ैरः दस औतार हुए यानी जल की रचना के औतार से शुरू होकर होते होते नरसिंह औतार यानी आधे आदमी आधे जानवर का औतार हुआ और फिर रामचन्द्रजी महाराज बारह कला सम्पूरन् और उनके बाद महाकाल भगवान कृष्ण महाराज सोलह कला सम्पूरन् का औतार हुआ-इसके बाद तवारीख़ बतलाती है कि कुल्ल मालिक के निज पुत्र कबीर साहब का औतार हुआ और इसके बाद जैसा कि सिल्सिले में चाहिये था खुद कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का औतार हुआ । तीसरे यह बात भी ग़ौर के क़ाबिल है कि जैसे मनुष्य की ज़िंदगी के चार हिस्से हैं यानी बचपन, जवानी, अधेड़ व बुढ़ापा इसी तौर पर रचना, की ज़िंदगी के भी चार हिस्से हैं यानी सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलयुग । जिस तौर पर चौथी अवस्था यानी बुढ़ापे में पहुंच कर क़ुदरती तौर

पर इन्सान के तन व मन की शक्तियां क्षीन होकर तैयारी चोला छूटने की होने लगती है इसी तौर पर चौथे जुग यानी कलयुग में आनकर तैयारी रचना के सिमटाव की कुदरती तौर पर होती है। चूंकि कुल्ल मालिक के औतार धारन करने से मतलब सिवाय जीवों को निबंध करने और सुरतों के निज धाम में पहुंचाने और इस तौर पर रचना का अभाव करने के और कुछ नहीं हो सक्ता और चूंकि कुल कार्रवाई कुल्ल मालिक की ऐन कुदरती क़ायदे पर होती है और जो कि सुरत उनकी अंस है इसलिये मिस्ल इन्सान के चोला छूटने के समय के कलयुग का ज़माना ही कुल्ल मालिक के औतार के लिये निहायत मौज़ूं ठहरता है यानी सिर्फ़ इसी समय में बूढ़े शरीर की तरह निहायत आसानी से कुदरती तौर पर कुल रचना की जान निकल सक्ती है।

॥ शब्द ॥

ना जानूं साहब कैसा है। टेक।
कोई दिखावे काली मूरत
कोई बतावे गजाधर सूरत।
रूप भयंकर पेख होय हैरत
क्या साहब तू ऐसा है। १।

कोइ तुलसी पीपल बतलाते
कोइ भैंसा बकरा कटवाते।
गाय सांप वन्दर पुजवाते
क्या साहब तू ऐसा है। २।
कोई कहे तुम अकाश सरूपा
संस्कृत के बसो तुम कूपा।
हवन यग्य के निस दिन भूखा
क्या साहब तू ऐसा है। ३।
कोई कहे तुम अरब में बसते
कुरां वज़ीफ़ा के बस रहते।
नबी मेहर बिन कभी न मिलते
क्या साहब तू ऐसा है। ४।
कोई कहे ईसा पुत्र तुम्हारा
आया जग में धर औतारा।
बिन उन मेहर न कोई सहारा
क्या साहब तू ऐसा है। ५।
बिन गिरजा तुम आन न भावे
जो चाहे तुम्हें वहां ही पावे।
इंजील का पढ़ना अधिक सुहावे
क्या साहब तू ऐसा है। ६।
कबीर और नानक गुरु के घराने
ग्रंथ बिना कोई गुरू नहिं मानें।

पुस्तक पूजें चौका आनें
　　क्या साहब तू ऐसा है । ७ ।
हे साहब मेरे प्रीतम प्यारे
　　हे स्वामी मेरे प्रान अधारे ।
क्या सचमुच रहो इनके सहारे
　　जिन का भाषा लेखा है । ८ ।
मेरे मन अस निश्चय आई
　　तुम्हरे किंकर सब यह रहाई ।
तुमते अधिका और न काई
　　क्या साहब तू ऐसा है । ९ ।
तन और मन और सूरत प्यारी
　　तीन बस्तु मोहिं दरसें न्यारी ।
अलग अलग इन रहे भंडारी
　　क्या साहब जग ऐसा हैं । १० ।
तन भंडार सब पिंड बखाना
　　मन भंडार ब्रह्मंड पिछाना ।
सुरत भंडार मैं तुमको जाना
　　क्या साहब तू ऐसा है । ११ ।
भटक भटक मैं बहु भटकाया
　　कहीं खोज ना तुम्हरा पाया ।
राधास्वामी दर जब सीस नवाया
　　तब यह समझा लेखा है । १२ ।

राधास्वामी सहाय।

ग़लतनामः राधास्वामी मत दर्शन।

सफ़हा	सतर	ग़लत	सहीह
३	८	अपनी	अपने
७	१८	रास्ते	रास्ता
११	१८	को	की
११	२२	जनूं	जुनूं
१२	१४	काइ	कोई
१८	२०	कारकुन	कारकुन
१९	१८	थोड़े	थोड़े
२१	१६	मशविरा	मशवरा
३२	११	मुहाविरा	मुहावरा
३५	१८	सच्चे व	व सच्चे
३७	१५	रोजे	रोज़े
३९	१८	सन्तके	सन्त के
४०	४	रम्मे	रस्मे
४७	१२	आधीन	अधीन
५०	२२	जावेंगे	जावेगी
५६	२	तिर्थंकर	तीर्थंकर
५९	२०	रचना,	रचना
६०	२	तैयारो	तैयारी

इत्तिला

हज़ूर साहब जी महाराज की तस्नीफ़ की हुई मुफ़स्सलः ज़ैल किताबें छपकर तैयार हैं और राधास्वामी सेन्ट्रल सतसंग दयाल बाग़ आगरा से बराहरास्त या नीचे लिखे हुए पते पर तहरीर करने से मंगाई जा सक्ती हैं। इनके अलावा रिसाला "जिज्ञासा नः १" भी छप रहा है और उम्मीद है कि अक्तूबर में तैयार हो जावेगा।

नाम किताब	क़ीमत
जतन प्रकाश	॥)
प्रेम बिलास भाग पहिला	॥)
,, ,, दूसरा	॥)
,, ,, तीसरा	॥)
राधास्वामी मत दर्शन (हिन्दी)	॥=)
,, ,, ,, ,, (उरदू)	॥=)
जिज्ञासा नः १ हिन्दी	॥)

बाबू ब्रिजबासी लाल,

बी. ए., एल एल. बी., वकील

अम्बाला शहर।